R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

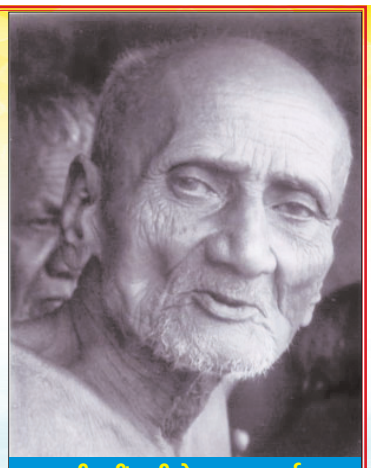

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 07 कुल पृष्ठ 16 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 08 दिसम्बर 2025, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के सानन्द सम्पन्न हुये त्रिवार्षिक चुनाव

श्री गजराज जैन गंगवाल महासभा के पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित

धर्म संरक्षिणी, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी एवं महिला महासभा के चुने गये पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य

रविवार दिनांक 30 नवम्बर 2025 को तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, एनएच 24, दिल्ली रोड, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, 244102 में श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (धर्म संरक्षिणी, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी एवं महिला महासभा) के त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुये। तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के उपकुलपति श्री वी. के. जैन ने मंच की कमान अपने हाथों में लेते हुये सर्वप्रथम मंच पर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल, महासभा के महामंत्री श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या, कोषाध्यक्ष श्री पवन जैन गोधा, श्रुत संवर्धिनी महासभा के महामंत्री डॉ. निर्मल कुमार जैन, श्रुत संवर्धिनी महासभा के कार्याध्यक्ष श्री अरविन्द लुहाड़िया एवं तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति श्री सुरेश जैन लुहाड़िया जी आदि को मंच पर आमंत्रित किया।

मंगलाचरण तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन महासभा के पदाधिकारियों के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

महासभा के महामंत्री श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या ने विगत वर्ष के महासभा के त्रिवार्षिक केन्द्रीय चुनाव सम्पन्न हुये थे, इस अवधि में जो कार्य हुये उसका विवरण सभी के समक्ष पढ़कर सुनाया।

श्रुत संवर्धिनी महासभा के महामंत्री डॉ. निर्मल जैन ने श्रुत संवर्धिनी महासभा के उद्देश्यों की जानकारी देते हुये सभी से शिक्षा के क्षेत्र में बढ़-चढ़कर सहयोग करने की अपील की।

श्री मनीष जैन लुहाड़िया जी, तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी वाईस चैयरमैन ने स्वागत भाषण में कहा कि आप सभी लोगों ने आज के कार्यक्रम के लिये शिक्षा मन्दिर का स्थान चुना इसके लिये आप सभी का स्वागत करता हूँ, जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी में जैनों के अलावा अन्य समुदाय के विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। त्रिवार्षिक चुनाव की प्रक्रिया मुख्य चुनाव अधिकारी श्री सुरेश लुहाड़िया जैन, मुरादाबाद (कुलाधिपति, तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी, मुरादाबाद), श्री गजेन्द्र बज, चार्टर्ड एकाउंटेंट एवं श्री अनुज जैन, एड्वोकेट दिल्ली नई दिल्ली द्वारा सम्पन्न की गई। तत्पश्चात चुनाव अधिकारियों ने चुनाव प्रक्रिया शुरू की तथा निम्नलिखित पदाधिकारियों को सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित किया

पदाधिकारियों की सूची सहित
शेष पृष्ठ 04 पर..

दक्षिण के भामाशाह सरिता एम के जैन चेन्नई द्वारा आचार्य कुंदकुंद की तपोभूमि पोन्नुरमले में बनेगा 24 तीर्थंकर मंदिर

Shri M.K. Jain Chennai

अनुपमा राजेन्द्र जैन, सनावद

पोन्नूरमले। पंच परमागम के रचनाकार महान आचार्य जिन्हें हम प्रतिदिन मंगलाचरण में स्मरण करते हैं ऐसे आचार्य श्री कुंदकुंद की तपोस्थली व तमिलनाडु की प्रमुख दिगंबर जैन धर्म प्रभावना भूमि पोन्नूरमले में 26 नवंबर, 25 को नवीन जैन मंदिर का शिलान्यास संपन्न हुआ। गणिनी आर्यिका 105 गुरुनंदनी माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में, तमिलनाडु के 350 मंदिरों के जीर्णोद्धारकर्ता, दानवीर भामाशाह सहित अनेक उपाधियों से सम्मानित श्रीमती सरिता महेंद्र कुमार जैन चेन्नई द्वारा यह विशाल मंदिर अपने स्वयं के अर्थ सहयोग से बनाया जाएगा। 24 तीर्थंकर भगवान का यह विशाल जिनालय अनुपम व भव्यतापूर्ण निर्मित होकर तपोभूमि तीर्थ को पूर्णता प्रदान करेगा। 26 नवंबर को हुए भव्य शिलान्यास समारोह में अरिहंतगिरी के भट्टारक स्वस्ति श्री धवलकीर्ति स्वामी जी के पावन निर्देशन में प्रतिष्ठाचार्य श्री बसंत जी, रवि जी शास्त्री अरिहंतगिरी व देश के गणमान्यजनों की उपस्थिति में शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ। स्थापित होने वाली 24 तीर्थंकर प्रतिमाओं में से एक 16वें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जी की प्रतिमा के समक्ष शिलान्यास विधि संपन्न हुई। दान चक्रवर्ती और दान चिंतामणि है महेंद्र सरिता जैन - उपस्थित विशाल जन समुदाय की भावना को देखते हुए गणिनी आर्यिका गुरुनंदनी माताजी ने श्री महेंद्र कुमार जैन को दान चक्रवर्ती और श्रीमती सरिता जैन को दान चिंतामणि की उपाधि से सम्मानित करते हुए कहा कि भव्य जिनालय का निर्माण करने के भाव अत्यंत प्रशंसनीय व उत्कृष्ट परिणाम का परिचायक है। उल्लेखनीय है कि श्रीमती सरिता एम के जैन, जैन जगत की शीर्षस्थ संस्था भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला महासभा की राष्ट्रीय अध्यक्षा हैं व देश में जैन जगत के सबसे बड़े आयोजन गोमटश्वेर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक 2018 में राष्ट्रीय अध्यक्ष रही हैं, उन्हें अनेक आचार्य, मुनिराज, आर्यिका माताजी, त्यागी गणों का आशीर्वाद प्राप्त है। श्री क्षेत्र अरिहंतगिरि में आपके द्वारा विशाल मंदिर का निर्माण व विद्यालय का निर्माण कराया गया है। अनेक समाजसेवी संस्थाओं में आपने अपने अर्थ का उपयोग करते हुए अनेक विद्यार्थियों को करोड़ों रुपए की छात्रवृत्ति व अस्वस्थ जनों का इलाज व आपरेशन करवाया है। आपकी दानशीलता की प्रशंसा की जा रही है। अनेक जनों ने आपकी दानशीलता की अनुमोदना की है।

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है। संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA
ACCOUNT NO. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600
PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow Pin Code - 226004 (U.P.)

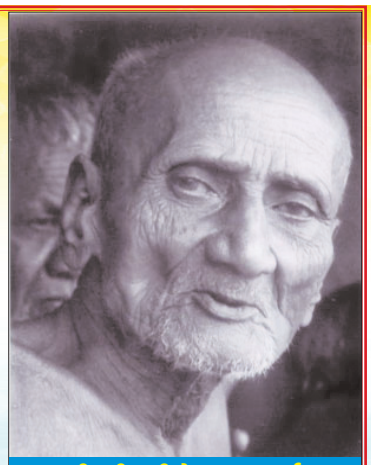

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 07 कुल पृष्ठ 16 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 08 दिसम्बर 2025, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

तीर्थंकर महावीर यूनीवर्सिटी मुरादाबाद में सम्पन्न श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के त्रिवार्षिक चुनाव का दृश्य

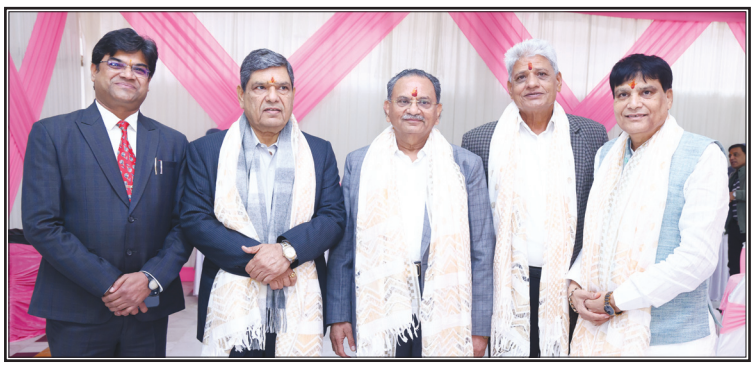

तीर्थंकर महावीर यूनीवर्सिटी मुरादाबाद में सम्पन्न श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के त्रिवार्षिक चुनाव का दृश्य

॥श्री महावीराय नमः॥
WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावेन के साथ
वर्ष 2026 मे 7 देशो की सैर
21 April, 18 May, 2 June, 16 June
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
GERMANY, SWITZERLAND
AUSTRIA, AMSTERDAM
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

आचार्यश्री संघ के नायक समय सागरजी का पिच्छिका परिवर्तन सम्पन्न

जबलपुर, 2 दिसंबर 2025। संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावी शिष्य जीवंत समयसार आचार्यश्री समयसागर जी महाराज ससंघ का पिच्छी परिवर्तन संपन्न हुआ। आचार्य श्री को नवीन पिच्छिका प्रदान करने का सौभाग्य जबलपुर के श्रेष्ठी श्रावक श्री शैलेश जी 'मिंकु भैया' एवं ब्र. संजीव भैया कटंगी को मिला। पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य मिला श्रावक श्रेष्ठि श्रीमान चक्रेश जी मोदी परिवार, जबलपुर को मिला। सौभाग्यशाली परिवार के पुण्य की बहुत बहुत अनुमोदना।

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

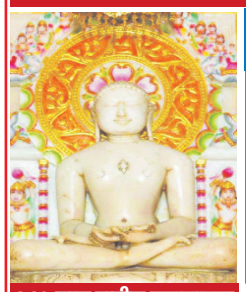

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM

@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्रः
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

JK MASALE SINCE 1997
Buy online on jkcart.com

— Breakfast Matlab —
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

तीर्थंकर महावीर यूनीवर्सिटी मुरादाबाद में सम्पन्न श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के त्रिवार्षिक चुनाव का दृश्य

धर्म संरक्षिणी महासभा, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी एवं महिला महासभा के चुने गये पदाधिकारी

शेष पृष्ठ 1 का....

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (धर्म संरक्षिणी)

क्र.सं.	नाम	स्थान	नामांकित पद
1	श्री गजराज जैन गंगवाल	दिल्ली	राष्ट्रीय अध्यक्ष
2	श्री प्रकाशचन्द जैन बड़जात्या	चैन्नई	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
3	श्री राजेश जैन बी शाह	अहमदाबाद	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
4	श्री अजित जैन चादुंवाड़	दुधनोई	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
5	श्री अशोक जैन छाबड़ा	गुवाहाटी	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
6	श्री सुन्दरलाल जैन डागरिया	उदयपुर	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
7	श्री अनिल जैन लुहाड़िया	मुरादाबाद	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
8	श्री अरविन्द जैन लुहाड़िया	दिल्ली	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
9	श्री मनोज जैन काला	गुवाहाटी	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
10	श्री कमल बाबु जैन	जयपुर	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
11	श्री हेमचन्द्र जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
12	श्री पवन जैन गोधा	दिल्ली	राष्ट्रीय महामंत्री
13	श्री प्रमोद जैन	बड़ौत	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
14	श्री संदीप जैन	गुड़गांव	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
15	श्री अशोक जैन जेतावत	उदयपुर	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
16	श्री सजय जैन पाटनी	रांची	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
17	श्री प्रकाश जैन वोहरा	दिल्ली	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
18	सी. ए. विनीत जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय सहकोषाध्यक्ष
19	श्री कमल जैन	गुवाहाटी	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
20	श्री अशोक जैन बड़जात्या	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
21	श्री योगेश जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
22	श्री विजय जैन (चांदी वाले)	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
23	श्री राजेश जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
24	श्री विकास जैन	बड़ौत	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
25	श्री स्वराज जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
26	श्री त्रिलोक जैन	बड़ागांव	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
27	श्री नवीन जैन शास्त्री	बड़ागांव	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
1	श्री एम. के. जैन	चेन्नई	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ संरक्षिणी) महासभा

क्र.सं.	नाम	स्थान	नामांकित पद
2	श्री धर्मचंद पहाड़िया	जयपुर	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
3	श्री तेज कुमार वेद	इन्दौर	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
4	श्री अभय कुमार शाह	लखनऊ	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
5	श्री संजीव जैन	लखनऊ	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
6	श्री अशोक कुमार जैन चुड़ीवाल	बरपेटा रोड	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
7	श्री विकास जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
8	श्री राजकुमार जैन सेठी	कलकत्ता	राष्ट्रीय महामंत्री
9	श्री कमल कुमार जैन	लखनऊ	संयुक्त महामंत्री
10	श्री सुशील कुमार बाकलीवाल	अजमेर	संयुक्त महामंत्री
11	श्री सुभाषचंद जैन	लखनऊ	संयुक्त महामंत्री
12	श्री किशोर कुमार जैन	बोगाई गांव	कार्यकारिणी सदस्य
13	श्री महावीर मणिकचंद सेठी	औरंगाबाद	कार्यकारिणी सदस्य
14	श्री अमित जैन	कर्नाटक	कार्यकारिणी सदस्य
15	श्री पवन कुमार जैन	सिलचर	कार्यकारिणी सदस्य
16	श्रीमती नवीना जैन बड़जात्या	बैंगलुरू	कार्यकारिणी सदस्य
17	श्री प्रदीप कुमार जैन	अरूणाचल	कार्यकारिणी सदस्य
18	श्री मनीष जैन गंगवाल	कलकत्ता	कार्यकारिणी सदस्य
19	श्री संनत कुमार जैन छाबड़ा	कलकत्ता	कार्यकारिणी सदस्य
20	श्री गौरव जैन	लखनऊ	कार्यकारिणी सदस्य
21	श्री प्रदीप झांझरी	डीमापुर	कार्यकारिणी सदस्य

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (श्रुत संवर्धिनी) महासभा

क्र.सं.	नाम	स्थान	नामांकित पद
1	श्री प्रवीण जैन	मुजफ्फनगर	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
2	श्री गजेन्द्र जैन	कुनकुरी छ.ग.	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
3	श्री इन्द्रेश जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
4	श्री सुबोध जैन	सोनीपत	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
5	श्री श्यामलाल जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
6	श्री शरद जैन कासलीवाल	दिल्ली	राष्ट्रीय महामंत्री
7	श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी	उदयपुर	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
8	श्री राजेश जैन	मुजफ्फरनगर	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (महिला) महासभा

क्र.सं.	नाम	स्थान	नामांकित पद
1	श्रीमती सरिता महेन्द्र कुमार जैन		राष्ट्रीय अध्यक्ष
2	श्रीमती रंजना बाकलीवाल		राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
3	श्रीमती संध्या जैन		राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
4	श्रीमती मीना झांझरी		संयुक्त कार्याध्यक्ष
5	श्रीमती सुमन जैन		संयुक्त कार्याध्यक्ष
6	श्रीमती निशा जैन		उपाध्यक्ष
7	श्रीमती सुधा जैन		उपाध्यक्ष
8	श्रीमती शिखा जैन		उपाध्यक्ष
9	श्रीमती माधवी जैन		उपाध्यक्ष
10	श्रीमती अनिता जैन		उपाध्यक्ष
11	श्रीमती नीलम जैन		उपाध्यक्ष
12	डॉ. ज्योत्स्ना जैन		महामंत्री
13	श्रीमती रिचा जैन		संयुक्त महामंत्री
14	श्रीमती इंद्रा जैन		मंत्री
15	श्रीमती अनु जैन		कोषाध्यक्ष
16	श्रीमती सुमित्रा जैन		केन्द्रीय सदस्य
17	श्रीमती रजनी जैन		केन्द्रीय सदस्य

मुख्य चुनाव अधिकारी श्री सुरेश लुहाड़िया जैन, मुरादाबाद (कुलाधिपति, तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी, मुरादाबाद) ने कहा कि सभी के सहयोग की अपेक्षा के साथ आज का चुनाव बहुत ही शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ।

दूसरा सत्र दोपहर से शुरू हुआ जिसमें समस्त महासभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, कार्याध्यक्ष एवं पदाधिकारियों को चुनाव अधिकारी श्री सुरेश लुहाड़िया जैन, मुरादाबाद (कुलाधिपति, तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी, मुरादाबाद) द्वारा सम्मान एवं नव निर्वाचित पदाधिकारियों ने आगे किये जाने वाले कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी।

चुनाव अधिकारी श्री गजेन्द्र बज, चार्टड एकाउंटेंट, दिल्ली ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि हमारी समाज का जो नेता होता है वह टार्चवियरर का काम करता है, वह रास्ता दिखाता है, समाज साथ देता है। यह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। नेता दूर दृष्टि वाला हो और सबका भला देखकर काम करने वाला हो। यह सर्वगुण जिसमें होते हैं उसको ही नेता कहते हैं। जो हम सबको समान दृष्टि से देखे और सबका भला कर सके। आज पुनः आदरणीय गजराज जी को समाज द्वारा अध्यक्ष पद पर मनोनयन किया गया है, हम सभी का कर्तव्य है कि उन्होंने जो बीड़ा उठाया है उसमें हम सभी को उनका साथ देना होगा, मुझसे जितना भी सहयोग होगा मैं करूंगा।

प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार के साथ गुल्लक योजना पर विशेष बल देते हुये कहा कि हर घर में एक गुल्लक होना आवश्यक है। बच्चे अलग-अलग गुल्लक रखते हैं और पैसे डालते हैं, उनको पता है कि यह पैसा कहां लगेगा इससे उनके अंदर बचपन से ही धार्मिक संस्कारों की वृद्धि होती है। उन्होंने श्री सम्मेदशिखर जी की यात्रा का विवरण भी दिया कि कैसे वहां विजातीय लोग सम्मेदशिखर जी की पवित्रता को क्षीण कर रहे हैं। हमें एक ड्रेस कोड रखना चाहिये ताकि तीर्थ की पवित्रता बचाई जा सके। हमने नये मंदिर तो बनाये लेकिन प्राचीन संस्कृति की रक्षा करना हम सभी की जिम्मेदारी है। हर प्रदेश के जो प्रान्तीय अध्यक्ष हैं वह एक टारगेट बनायें कि हमें अपने क्षेत्र के मंदिरों तथा अपने घरों में प्राचीन संस्कृति की सुरक्षा के लिये एक गुल्लक अवश्य रखें। इससे जैन धर्म की प्रभावना होगी तथा हमारी प्राचीन संस्कृति की रक्षा में धन की कमी नहीं होगी।

जारी पृष्ठ 05 पर....

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES

SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD

ANAMICA TRADERS PVT. LTD.

L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

शेष पृष्ठ 04 का....

श्रुत संवर्धिनी महासभा के महामंत्री शरद जैन कासलीवाल ने कहा कि मुझे बहुत खुशी हुयी कि एक मंच मुझे मिला कि हम इससे जुड़कर समाज की सेवा कर सकेंगे। व्यक्ति खुद कमाये, खुद खाये यह उसकी प्रवृत्ति है परन्तु खुद कमाये और दूसरों को खिलाये यह जैन संस्कृति है। हमें दिगम्बर जैन समाज के उन सभी बच्चों को, युवा वर्ग को मजबूत करना है जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं। आपके आसपास कोई परिवार हो जो अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दे सकता, आप उस व्यक्ति विशेष को श्रुत संवर्धिनी महासभा से जोड़कर स्कालरशिप दिलवाकर उन बच्चों के भविष्य को संवारने का काम करें।

आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि आप सभी माननीय अतिथिगण, पदाधिकारीगण, सभी प्रांत एवं क्षेत्रीय प्रतिनिधि और मेरे प्रिय समाज बंधुओ, श्री भारतवर्षीय जैन दिगम्बर महासभा का निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने पर और इस पावन स्थल में आप सबके मध्य उपस्थित होकर मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मेरा संकल्प केवल पद की शोभा तक सीमित नहीं है, बल्कि जैन समाज को संगठित, सशक्त और आत्म निर्भर बनाना मेरी प्राथमिकता है। जैसा कि प्रकाश जी ने महासभा की 2021 से 2025 तक की सारी गतिविधियों के बारे में बताया।

आपने कहा कि महासभा की आगामी योजनाओं का उद्देश्य केवल कागजों पर लिखी आकांक्षाएँ नहीं, बल्कि समाज की धरातलीय आवश्यकताओं का समाधान है। मैं आप सभी के समक्ष हमारी श्री भारतवर्षीय जैन दिगम्बर महासभा की भावी योजना प्रस्तुत कर रहा हूँ-

1. महासभा भवन का निर्माण: एक भव्य, विशाल एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त 'महासभा भवन' का निर्माण, जहाँ से राष्ट्रीय स्तर पर सभी कार्यों एवं योजनाओं का संचालन सुचारु रूप से किया जा सके।

2. 2027 की जनगणना में जैन समाज की सशक्त भागीदारी-

भारत सरकार द्वारा जनगणना में जैन समाज की संख्या 45 लाख दर्शाई गई है। महासभा का लक्ष्य है कि 'पूरे देश में जैन परिवार जनगणना में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें ताकि समाज की वास्तविक संख्या दर्ज हो और अधिकार सुरक्षित रहें।

3. जैन आत्मनिर्भर योजना को सुदृढ़ एवं विस्तारित करना: वर्तमान निर्धारित निधि में और अधिक वृद्धि कर बेरोजगार, व्यवसाय एवं स्वरोजगार की इच्छा रखने वाले भाई-बहनों को आर्थिक और मार्गदर्शन सहायता प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना।

4. छात्रवृत्ति एवं शिक्षा सहयोग योजना का विस्तार: छात्रवृत्ति राशि बढ़ाना तथा मेधावी विद्यार्थियों (मेट्रिक के आधार पर) को उच्च शिक्षा, प्रोफेशनल पाठ्यक्रम एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विशेष सहायता देकर 'जैन प्रतिभाओं को आगे बढ़ाना'।

5. जैन कन्या विवाह योजना का सशक्त क्रियान्वयन: प्रतिवर्ष कम से कम '50 जैन कन्याओं के विवाह' महासभा के बैनर तले सम्पन्न कराना, जिससे समाज में योग्य कन्याओं के विवाह के लिए आर्थिक एवं सामाजिक सहयोग सुनिश्चित हो सके।

6. 'सभी जैन तीर्थक्षेत्रों को सशक्त बनाना – तीर्थों की पवित्रता, सुरक्षा, विकास एवं सुचारु व्यवस्था हेतु सतत प्रयास करना तथा तीर्थों की महिमा को अक्षुण्ण बनाए रखना।

7. श्री सम्मेद शिखर जी की रक्षा एवं झारखंड के सराक जैन समाज को सशक्त करना – श्री सम्मेद शिखरजी की पवित्रता और संरक्षण के लिए हर स्तर पर कार्य करना तथा झारखंड के सराक जैन समाज के सहयोग, संगठन और मजबूती पर विशेष ध्यान देना ताकि सम्मेद शिखरजी पर कोई भी आंच न आ सके।

8. सदस्यता विस्तार अभियान- अधिक से अधिक सदस्यों को महासभा से जोड़कर जन-जन तक संगठन की पहुँच बनाना तथा युवा, महिलाएँ, वरिष्ठ एवं सभी वर्गों को संगठनात्मक रूप से सशक्त करना।

9. प्रत्येक क्षेत्र में महासभा अधिवेशन – देशभर में क्षेत्रवार अधिवेशन साधु-संतों के सानिध्य में आयोजित कर 'धर्म, संगठन और समाज विकास' को एक साथ आगे बढ़ाना।

10. महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट में ट्रस्टी संख्या बढोतरी करना – योग्य, अनुभवी एवं समाजहितैषी भामाशाहों को ट्रस्टी बनाकर महासभा की संचालन क्षमता, पारदर्शिता एवं आर्थिक मजबूती को और सशक्त करना।

11. जैन रिटायर्ड प्रबुद्धजनों को जोड़ना – सेवानिवृत्त वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव, ज्ञान, ऊर्जा और नेतृत्व का उपयोग कर महासभा की योजनाओं को जमीनी स्तर पर और प्रभावी ढंग से लागू करना।

आपने कहा कि समाज तभी मजबूत होता है जब संगठन जागरूक हो, युवा आगे हों, महिलाएँ सहभागिता निभाएँ, बुजुर्ग दिशा दें और हम सब एकता से चलें, मेरी आप सभी से विनम्र अपील है - हम आलोचक नहीं, सहयोगी बनें। हम दर्शक नहीं, कार्यकर्ता बनें। हम व्यक्तिगत नहीं, सामूहिक सोचें। हम सब मिलकर हाथ से हाथ और दिल से दिल मिलाकर चलें तो 'जैन समाज की शक्ति, मान-सम्मान और भविष्य' निश्चित रूप से स्वर्णिम होगा। महासभा अध्यक्ष श्री गजराज जैन ने मुख्य चुनाव अधिकारी श्री सुरेश लुहाड़िया जैन, मुरादाबाद (कुलाधिपति, तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी, मुरादाबाद), श्री गजेन्द्र बज, चार्टर्ड एकाउंटेंट एवं श्री अनुज जैन, एड्वोकेट दिल्ली को सुव्यवस्थित ढंग से चुनाव कराये जाने के लिये धन्यवाद ज्ञापन किया।

तीर्थंकर महावीर यूनीवर्सिटी मुरादाबाद में सम्पन्न श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के त्रिवार्षिक चुनाव का दृश्य

श्री श्रेयांस कुमार जी ने कहा कि मैं अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। आदरणीय सेठी जी का आशीर्वाद हमेशा मुझ पर रहा है। डॉ. श्रेयांस जी द्वारा प्रकाशित की गई पुस्तकों का विमोचन मुख्य चुनाव अधिकारी श्री सुरेश लुहाड़िया जैन, मुरादाबाद (कुलाधिपति, तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी, मुरादाबाद) ने करवाया और उन्हें पुस्तकें भेंट स्वरूप दी। उन्होंने समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यालय के कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि आदरणीय गजराज जी ने हमारे सर पर हाथ रखा है कि तुम आगे बढ़ो, हम उन्हीं की प्रेरणा से काम कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। सबसे पहले पूरे देश के अंदर जहां-जहां महासभा का गठन नहीं हुआ है वहां करना है। मैं वादा करता हूँ कि तन-मन-धन से किसी भी प्रकार से महासभा को किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहने दूंगा।

नवनिर्वाचित महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जी गोधा ने जनसाधारण सभा में उपस्थित सभी महानुभावों, निर्वाचन अधिकारियों, महासभा के नवनिर्वाचित तथा तीर्थंकर महावीर यूनीवर्सिटी के कुलाधिपति श्री सुरेश जैन लुहाड़िया का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। महासभा की त्रैवार्षिक चुनाव प्रक्रिया का शिक्षा के मन्दिर, तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी में सम्पन्न होना गौरवशाली है। श्री गोधा जी ने नव निर्वाचित पदाधिकारियों और सदस्यों से अनुरोध किया कि महासभा में अधिकाधिक संख्या में युवाओं को जोड़ने का अभियान प्रारंभ करें तथा महासभा की सदस्य संख्या 17,000 हजार तक ले जायें। महासभा की साधारण सभा में अधिक अनुमान से कम उपस्थिति चिंता का विषय है। हम प्रतिवर्ष सैकड़ों धर्मानुयायियों को शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर जी की निःशुल्क यात्रा कराते हैं। उसके अन्दर कोई राशि नहीं है, जिसकी इच्छा हो वह दे जिसकी इच्छा न हो तो वह न दे। जिन्होंने सम्मेदशिखर जी के दर्शन अर्थाभाव के कारण अभी तक नहीं किये हैं उनको निःशुल्क दर्शन कराने की इच्छा है। सम्मेदशिखर जी की यात्रा पर अवश्य चलें। आपने समस्त समाज से अपील है कि वे अपने परिवार के युवक-युवतियों को महासभा से जोड़ें। आपने कहा कि हमारी दिगम्बर जैन महासभा के उद्देश्य क्या हैं, मैं एक विजन लेकर आया हूँ। हमारी महासभा के जो भी पदाधिकारी एवं सदस्य हैं उनका प्रमुख उद्देश्य यही होना चाहिये कि एक जगह एकत्रित होकर जैन धर्म की रक्षा करना। हमारी समाज के जो भी जरूरतमंद युवा वर्ग हैं उनको देश विदेश में पढ़ाई करने के लिये किसी भी चीज की जरूरत हो हम सब आगे बढ़कर उनका सहयोग करें। हमारा विश्वास है कि युवा लोगों के महासभा के जुड़ने से दिगम्बर परम्परा को लाभ मिल रहा है और मिलेगा क्योंकि वे ही भविष्य में इस परम्परा का निर्वाह करेंगे।

उपस्थित प्रमुख महानुभाव- श्री गजराज जैन गंगवाल, श्री सुरेश लुहाड़िया जी, श्री प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या, श्री पवन जैन गोधा, श्री प्रकाश बोहरा, दिल्ली, श्री शरद कासलवाल जी, श्री प्रवीण जैन, श्री प्रकाश जैन बोहरा, श्री गजेन्द्र बज, श्री अनुज जैन एडवोकेट, श्रीमती शशि जैन, अमरोहा, श्री वी. के. जैन, श्री मनीष लुहाड़िया, श्री सन्दीप जैन, श्री विकास जैन, दिल्ली, श्री प्रमोद जैन, बड़ौत, डॉ. निर्मल कुमार जैन, डॉ. ज्योत्स्ना जैन, श्री नवीन जैन, दिल्ली, श्री योगेश जैन, श्री अनिल जैन लुहाड़िया, श्री अरविन्द जैन लुहाड़िया, श्री मनोज जैन काला, असम, श्री हेमचन्द्र जैन, दिल्ली, श्री महिपाल पहाड़िया जी, श्री अशोक जैन जेतावत, उदयपुर, श्री सूर्यांक जैन, दिल्ली, श्री नागेन्द्र पटेल, गुरुग्राम, श्री अंकित जैन, बड़ौत, ए. के. जैन, दिल्ली, श्री अतुल जैन, बड़ौत, श्री उत्तमचंद्र जैन, श्री नवीन जैन शास्त्री, श्री त्रिलोक जैन, श्री पुनीत जैन, श्रीमती दीपा जैन, श्री रिषभ जैन, दिल्ली, श्री मुकेश जैन, बड़ौत, श्री रमेश जैन, श्री राकेश जैन, श्री सुरेश जैन, श्री रमेश जैन, श्री दिनेश जैन, श्री विकास, श्री नीरज जैन, श्री सन्दीप जैन, बड़ौत, श्री प्रियंक जैन, श्री प्रदीप कुमार जैन, श्री कुलभूषण जैन, श्री शिखर चन्द जैन, श्रीमती करिश्मा जैन, श्रीमती पूनम जैन, श्रीमती मीना जैन, श्रीमती द्रोपदी जैन, श्रीमती अंजू जैन, बलवीर नगर, दिल्ली, श्री महेन्द्र कुमार जैन, श्री सुभाष जैन, श्री महेश चन्द्र जैन, श्री शीतल प्रसाद जैन, श्री सुशील कुमार जैन, श्री संतोष जैन, श्री स्वराज जैन, श्री सुनील जैन, श्रीमती रिचा जैन, श्री यश जैन, श्रीमती रजनी जैन, दिल्ली, श्रीमती उर्मिला जैन, श्री देवेन्द्र जैन, श्री कृष्णा जैन, श्री आशीष जैन, श्री हरीश जैन, श्री तुषार जैन, श्री सुमित जैन, दिल्ली आदि। राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जी गोधा द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यवाही सम्पन्न हुई।

पवन कुमार जैन गोधा
महामंत्री
श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सूची

श्री गजराज जैन गंगवाल
दिल्ली, राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
चेन्नई, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

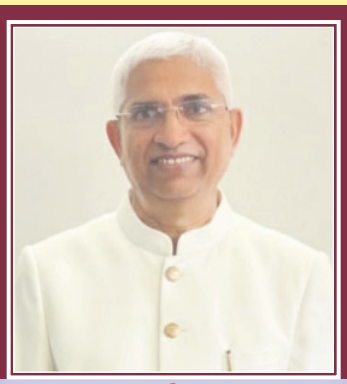

श्री राजेश जैन बी. शाह
अहमदाबाद, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री पवन जैन गोधा
दिल्ली, राष्ट्रीय महामंत्री

श्री प्रकाश जैन वोहरा
दिल्ली, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री अजित जैन चांदुवाड़
दुधनोई, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री अशोक जैन छाबड़ा
गुवाहाटी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुन्दरलाल जैन डागरिया
उदयपुर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री अनिल जैन लुहाड़िया
दिल्ली, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री अरविन्द जैन लुहाड़िया
मुरादाबाद, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री मनोज जैन काला
गुवाहाटी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री कमल बाबू जैन
जयपुर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री हेमचन्द्र जैन
दिल्ली, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री प्रमोद जैन, बड़ौत
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

श्री संदीप जैन, गुड़गांव
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

श्री संजय जैन पाटनी
रांची, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

श्री अशोक जैन जेतावत उदयपुर
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

सी. ए. विनीत जैन, दिल्ली
राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष

श्री विजय जैन (चांदी वाले)
दिल्ली, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री अशोक जैन बड़जात्या
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, दिल्ली

श्री राजेश जैन
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, दिल्ली

श्री योगेश जैन
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, दिल्ली

श्री विकास जैन
बड़ौत, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

मनोनीत पदाधिकारी/सदस्य

श्री कमल जैन, गुवाहाटी
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री त्रिलोक जैन, बड़ागांव
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री नवीन जैन शास्त्री, बड़ागांव
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री स्वराज जैन, दिल्ली
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री ललित जैन सरावगी
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, कोलकाता

श्री मुकेश जैन (एडवोकेट)
नलबाड़ी, कार्यकारिणी सदस्य

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (तीर्थ संरक्षिणी) के पदाधिकारी/कार्यकारिणी सदस्य

श्री गजराज जैन गंगवाल
दिल्ली, राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री एम. के जैन
चेन्नई, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री धर्मचंद पहाड़िया
जयपुर, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

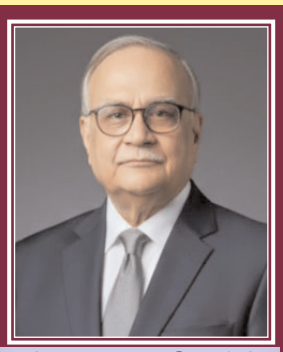

श्री राजकुमार जैन सेठी
कोलकाता, राष्ट्रीय महामंत्री

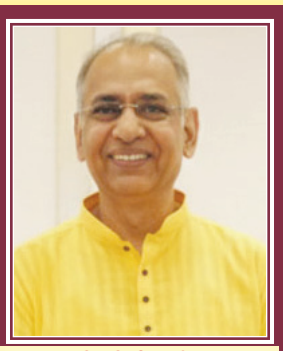

श्री टी के. वेद
इन्दौर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री अभय जैन शाह
लखनऊ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री संजीव जैन
लखनऊ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री अशोक जैन चुड़ीवाल
बरपेटा रोड, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री विकास जैन
दिल्ली, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री नवरतन जैन
चंडीगढ़, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री कमल कुमार जैन,
लखनऊ राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

श्री सुभाषचंद जैन
लखनऊ राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

श्री किशोर कुमार जैन
बोगाईगांव, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री सनतकुमार छाबड़ा
कोलकाता, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री अमित जैन
गुलबर्गा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री पवन पाण्ड्या
सिल्चर, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

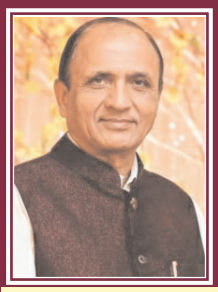

श्री महावीर मानिकचंद सेठी
औरंगाबाद, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्रीमती नवीना बड़जात्या
बैंगलुरू, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री प्रदीप कुमार जैन
ईटानगर, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्री प्रदीप झांझारी
डीमापुर, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

तीर्थ संरक्षिणी महासभा के मनोनीत पदाधिकारी/ कार्यकारिणी सदस्यों की सूची

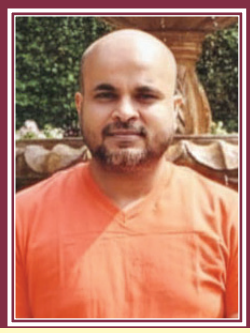

श्री गौरव जैन
लखनऊ
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

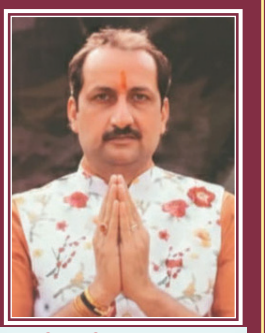

श्री मनीष गंगवाल
कोलकाता
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

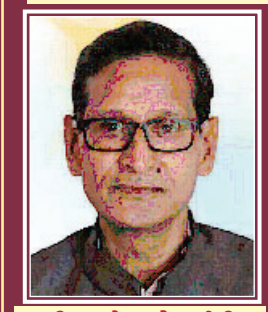

श्री अशोक जैन सेठी
बैंगलोर
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री सजय जैन दीवान
सूरत
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री ज्ञानचंद पाटनी
दुर्ग
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

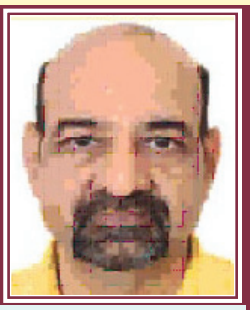

श्री निर्मल जैन बज
दिल्ली
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री दिलीप कासलीवाल
(बंधन मैरिज ब्यूरो) मुंबई,
कार्यकारिणी सदस्य

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (श्रुत संवर्धिनी) की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सूची

श्री गजराज जैन
गंगवाल दिल्ली
राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री प्रवीण जैन
मुजफ्फरनगर
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री गजेन्द्र जैन पाटनी
कुनकुरी
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री इन्द्रेश जैन
दिल्ली
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री श्यामलाल जैन
दिल्ली
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुबोध जैन
सोनीपत
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री शरद जैन कासलीवाल
कासलीवाल
दिल्ली, राष्ट्रीय महामंत्री

श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी
उदयपुर
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

श्री राजेश जैन
मुजफ्फरनगर
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

श्रुत संवर्धिनी के मनोनीत पदाधिकारी

श्री संतोष जैन काला सी. ए.
गुवाहाटी
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला महासभा

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्रीमती सरिता महेंद्र कुमार जैन

श्रीमती सरिता एम के जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला महासभा निर्विरोध अध्यक्ष बनाए जाने पर हार्दिक शुभकमनाये

राष्ट्रीय पदाधिकारियो का स्वागत

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला महासभा के राष्ट्रीय पदाधिकारियो की नई सूची सभी पदाधिकारियो को बहुत बहुत बधाई

श्रीमती रंजना जैन
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्रीमती संध्या जैन
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्रीमती मीना जैन
संयुक्त कार्याध्यक्ष

श्रीमती सुमन जैन
संयुक्त कार्याध्यक्ष

श्रीमती वीणा जैन
सह कार्याध्यक्ष

श्रीमती निशा जैन
उपाध्यक्ष

श्रीमती सुधा जैन
उपाध्यक्ष

श्रीमती शिखा जैन
उपाध्यक्ष

श्रीमती माधवी जैन
उपाध्यक्ष

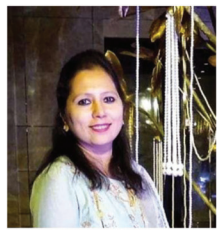
श्रीमती अनीता जैन
उपाध्यक्ष

श्रीमती नीलम जैन
उपाध्यक्ष

डॉ. ज्योस्तना जैन
महामन्त्री

श्रीमती ऋचा जैन
संयुक्त महामन्त्री

श्रीमती इंद्रा जैन
मंत्री

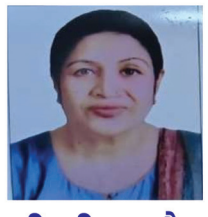
श्रीमती अनु जैन
कोषाध्यक्ष

श्रीमती सुमित्रा जैन
केन्द्रिय सद्स्य

श्रीमती स्नेहलता जैन
केन्द्रिय सदस्य

श्रीमती रजनी जैन
केन्द्रिय सद्स्य

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

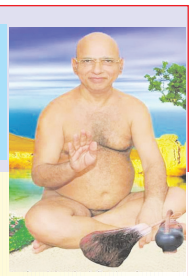

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

Jain Group

पंचदिवसीय भगवान महोत्सव गुफा मंदिर लोकार्पण समारोह पधारे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

557 दिनों की कठोर साधना 496 दिन का निर्जल उपवास का अनुशासन आत्मसंयम का एक अद्भुत उदाहरण देखने को मिला - योगी आदित्यनाथ

उ. प्र. में फाजिलनगर का नाम होगा 'पावानगरी', मुख्यमंत्री ने दी जानकारी

भारतीय संस्कृति धन पतियों का नहीं धर्मात्माओं का सम्मान करती है: आचार्य प्रसन्न सागर जी

नरेंद्र अजमेरा/पियुष कासलीवाल

गाजियाबाद। यह मेरा सौभाग्य है, गुफा मंदिर भगवान पारसनाथ स्वामी व क्रांतिकारी राष्ट्र संत तरुण सागर जी महाराज की स्मृतियों के दर्शन करने का अवसर मिला। भारत की परम्परा भारत की स्मृतियों में संतों ऋषियों मुनियों के त्याग की एक महा गाथा है। यह गाथा विश्व मानवता के लिए एक प्रेरणा रही है। अयोध्या में भगवान प्रभु राम के मंदिर का ध्वज आरोहण हुआ। जो पूरे विश्व में सनातन का वैभव बता रहा है। प्रथम तीर्थंकर भगवान राजा ऋषभदेव स्वामी व चार अन्य जैन तीर्थंकर अयोध्या की धरती पर पैदा हुए। आध्यात्मिक नगरी काशी में चार तीर्थंकर अवतरित हुए। भगवान महावीर स्वामी संभवनाथ स्वामी की जन्मस्थली के दर्शन हुए। इन 24 जैन तीर्थंकरों ने समाज को एक नई दीक्षा प्रदान की है। उन्होंने मानव समाज को करुणा, मैत्री, अहिंसा की प्रेरणा दी है। मानव के साथ साथ जीव जंतु के प्रति दया का भाव दिया है। मानव सभ्यता को नई ऊंचाइयों पर पहुंचना है तो अध्यात्म के साथ चलना होगा। यह बात भारत गौरव प.पू. साधना महोदधि 'अंतर्मना आचार्यश्री 108 प्रसन्नसागर जी महाराज के सानिध्य में श्री तरूण सागरम् पारसनाथ अतिशय तीर्थ धाम मुरादनगर में चल रहे पंचदिवसीय भगवान महोत्सव के अवसर पर 100 दिन में तैयार गुफा मंदिर का लोकार्पण करने पहुंचे। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने उपस्थित गुरुभक्तों से कही।

उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि हमारी सरकार ने उत्तर प्रदेश कुशी नगर के पावागढ़ में जहां 'भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था उस 'फाजिल' नगर का नाम 'पावानगरी' के रूप में उसके नामकरण की कार्यवाही को आगे बढ़ाया है। नवकार दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने देश के नो सूत्र दिए थे। जैन मुनि की जैन मुनि की परम्परा उसी पवित्रता के कार्यों को आगे बढ़ा रही है।

557 दिनों की कठोर साधना 496 दिन का निर्जल उपवास का अनुशासन आत्म संयम का एक अद्भुत उदाहरण देखने को मिलता है कि अगर हम संकल्प कर लें तो जो हमें बाहर दिखाई दे रहा है वह सब हमें अंदर दिखाई देने लगेगा। जो मुझे प्रसन्न सागर जी साधना के माध्यम से देखने व अनुभव करने का अवसर मिला।

इस अवसर पर अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर गुरुदेव ने कहा कि बसंत आता है तो प्रकृति मुस्कुराती है और संत आता है तो संस्कृति मुस्कुराती है। ये मंच योगी का मंच है, त्यागी का मंच है। जिंदगी में त्यागी बन के जीना। भारतीय संस्कृति का सिद्धान्त है क्योंकि भारतीय संस्कृति धन पतियों का नहीं धर्मात्माओं का सम्मान करती है, भारतीय संस्कृति रागी का नहीं त्यागी का सम्मान करती है। भारतीय संस्कृति सत्ताधीशों का नहीं सन्यासियों का सम्मान करती है। आदित्य नाथ योगी जी ने 26 साल की उम्र में पूरा जीवन परिवार समाज के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया।

इस सदी का पुण्य कहो कि दोनों बड़े नेता मोदी जी और योगी जी एक पूरे विश्व में भारत को शिखर पे लाकर खड़ा कर दिया और दूसरे ने पूरे उत्तर प्रदेश के थोबड़े को चेंज कर दिया। आज भारत में 'राम की मर्यादा कृष्ण का प्रेम और महावीर की अहिंसा उद्देश्य सफल होता दिखाई दे रहा है।

आयोजन से पूर्व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी व उपाध्याय मुनि पीयूष सागर जी गुरुदेव सहित ससंघ के दर्शन कर के आशीष ग्रहण किया। तत्पश्चात 100 दिनों में बने भव्य गुफा मंदिर का लोकार्पण किया जहां उन्होंने भगवान पारसनाथ स्वामी के दर्शन किए जिसके बाद समाधिस्थ क्रांतिकारी राष्ट्र संत तरुण सागर जी महाराज की स्मृतियों के दर्शन किए।

इस अवसर गुरुदेव द्वारा श्री योगी का अखंड लौंग की माला से सम्मान कर कमंडल भेंट किया। मुख्यमंत्री योगी ने गुरुदेव द्वारा लिखित अंतर्मना उवाच व मेरी विटिया पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार मंत्री मंडल के सुनील शर्मा, नरेश कश्यप, सांसद अतुल गर्ग, विधायक नंद किशोर गुर्जर, अमित पालज, पूर्व सांसद रमेश चन्द तोमर, भाजपा महा नगर अध्यक्ष मयंक गोयल सही बड़ी संख्या में गुरुभक्त परिवार मौजूद था। संचालन ब्रह्मचारी तरुण भैया व आभार अध्यक्ष तरुण क्रांति मंच सुनील जैन ने माना।

महासभा प्रबंधकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा- धर्म संरक्षिणी, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी एवं महिला महासभा के मुरादाबाद में नवनिर्वाचित पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह आगामी रविवार दिनांक 21 दिसम्बर, 2025 को प्रातः 11 बजे श्री दिगम्बर जैन मंदिर जी, निवाई (राजस्थान) में वात्सल्य वारिधि, परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में होगा। सभी से पधारने हेतु विनम्र आग्रह है।

- पवन कुमार गोधा महामंत्री
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

जैन मुनिश्री विशल्यसागर जी से गालीगलौज, हमला करने व कपड़े पहनाने की धमकी

पुनीत जैन

मुजफ्फरपुर से मिथिलापुर NH हाइवे पर नगर पंचायत सरैया से आगे ढोकरा स्थान के पास एक बेहद चिंताजनक घटना हुई। परम पूज्य परिषह-जयवंत, उपसर्गजयी श्रमण श्री विशल्यसागर जी मुनिराज बिहार के दौरान विहाररत थे। इसी दौरान एक अज्ञात बाइक सवार युवक वहां पहुँचा और हमला करने की कोशिश की, अभद्र गाली-गलौज की तथा वस्त्र पहनाने की धमकी दी। इस गंभीर स्थिति में भी

NH हाइवे पर मुनि विशल्यसागर जी पर हमला करने की कोशिश!

पूज्य मुनि श्री ने इसे उपसर्ग मानकर मौन धारण कर लिया और वहीं स्थान पर ध्यानस्थ होकर शांति से विराजमान रहे। यह घटना न केवल जैन समाज बल्कि पूरे संत-समाज के लिए अत्यंत चिंताजनक है। समाज इस कृत्य की कड़ी निंदा करता है और प्रशासन से मांग करता है कि आरोपी बाइक सवार को शीघ्र पहचान कर उचित कार्रवाई करे। अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले साधु पर हमला मानवता पर हमला है। पूज्य मुनि श्री की संयम-शक्ति और धैर्य पूरे समाज के लिए प्रेरणा है। जैन समाज और स्थानीय प्रशासन से अनुरोध है कि साधु-सन्तों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए ताकि वे निडर होकर धर्म विहार कर सकें।

राजस्थान सरकार के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के केम्प कार्यालय में

आचार्यश्री सुन्दर सागर जी एवं आचार्यश्री शशांक सागरजी का हुआ जयकारों के साथ भव्य मंगल प्रवेश

मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय मानसरोवर में आचार्य सुंदर सागर महाराज ससंघ की हुई दिव्य देशना-एस एफएस दिगम्बर जैन मंदिर से मुख्यमंत्री पैदल साथ लेकर आये आचार्य संघ को

प्रसन्न रहने वाला ही हमेशा तरक्की करता है - आचार्य सुन्दर सागर महाराजः सकल जैन समाज ने मुख्यमंत्री को "मातृ भू सेवक" की उपाधि से किया अलंकृत

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 27 नवम्बर। राजस्थान सरकार के यशस्वी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के केम्प कार्यालय में आचार्य श्री 108 सुन्दर सागर जी महाराज एवं आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी महाराज ससंघ का जयकारों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। कार्यक्रम में आचार्य श्री ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि जिस तरह साधु संत सारे भक्तों एवं श्रद्धालुओं के होते हैं उसी तरह सच्चा नेता भी वही होता है जो पूरे प्रदेश, देश एवं विश्व का होता है, ना कि किसी सम्प्रदाय विशेष का। अपने जीवन में यदि तरक्की करना चाहते हो तो हमेशा प्रसन्न रहना सीखो। प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति ही हमेशा उन्नति कर सकता है, ये उद्गार प्रसिद्ध दिगम्बर जैन आचार्य दिव्य तपस्वी आचार्य सुन्दर सागर महाराज ने गुरुवार, 27 नवम्बर को मानसरोवर के बी टू पास स्थित मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय पर आयोजित धर्म सभा में व्यक्त किये। आचार्य श्री ने आगे कहा कि जो भगवान के भजन करेगा वही मुख्यमंत्री और मंत्री बनेगा। जिस तरह गीता सनातन का सबसे बडा ग्रंथ है उसी तरह जैन धर्म का सबसे बड़ा ग्रंथ तत्वार्थ सूत्र है। उन्होंने कहा कि भजन लाल जी दौड़े दौड़े संतों के पास गये यह उनका पुण्य था, और संत मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय आये ये प्रभु की कृपा है। धर्म में राजनीति आने पर विनाश होता है लेकिन राजनीति में धर्म आने पर विकास होता है। राजनीति नीति बन जाती है, भगवान महावीर के सिद्धांतों का पालन करने वाला हमेशा अग्रणी रहता है, आचार्य श्री ने अयोध्या के राम मंदिर का उल्लेख करते हुए कहा कि जब हम 20 साल पहले अयोध्या गये थे तब वहां के प्रशासन ने जानकारी देते हुए बताया कि राम मंदिर की खुदाई में भगवान आदिनाथ की मूर्ति भी निकली थी। उन्होंने कहा कि राम मंदिर किसी सम्प्रदाय विशेष का नहीं है यह तो मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम एवं भगवान महावीर के सिद्धांतों को मानने वाले सभी अनुयायियों का है, इससे पूर्व आचार्य सुन्दर सागर महाराज ने अपना उद्बोधन वन्दे मातरम तथा भारत माता की जयकार से शुरू किया।

इससे पूर्व आचार्य शशांक सागर मुनिराज ने कविता के माध्यम से भजन लाल सरकार की प्रशंसा की तथा मजाकिया अन्दाज में मंदिरों की रोड साफ करवाने तथा मंदिरों की बिजली माफ करवाने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि भगवान की भक्ति कर लो वर्तमान का वर्धमान आपके साथ है।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने अपने उदबोधन में कहा कि मैं सांगानेर विधान सभा के मेरे कार्यालय में पधारे हुए सभी दिगम्बर जैन संतों को सांगानेर एवं राजस्थान की 8 करोड़ जनता की ओर से नमन करते हुए सम्मान करता हूं। ज्ञान और अहिंसा का दीपक जलाने वाले आचार्य सुन्दर सागर महाराज सहित सभी संतों को रास्ता दिखाने के जज्बे को प्रणाम करता हूं। आपकी त्याग तपस्या में बहुत बड़ी ताकत है। आप हमेशा भलाई के लिए तथा समाज को रास्ता दिखाने का काम करते हैं। देश को आगे बढ़ाने के लिए आज की युवा पीढ़ी को आपका मार्गदर्शन मिल रहा है। जैन धर्म केवल एक धर्म नहीं अपितु जीवन जीने की पूर्ण कला है। हमारी सरकार सत्य, अहिंसा, त्याग, तपस्या को अपनाकर पूरे प्रदेश को स्वर्ग बनायेगी ऐसी मेरी कामना है।

कार्यक्रम में विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि इस मौके पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को सकल दिगम्बर जैन समाज की ओर से ''मातृ भू सेवक'' की उपाधि से अलंकृत कर सम्मानित किया गया।

आचार्य श्री के सानिध्य में राजस्थान सरकार के सहकारिता मंत्री गौतम कुमार दक, सुनील जैन लोहेवाला, महावीर सुरेंद्र जैन एडवोकेट जयपुर, उपमहापौर पुनीत कर्णावट, सुरेश मिश्रा, राजेश अजमेरा, विनोद जैन कोटखावदा आदि ने मुख्यमंत्री को प्रशस्ति भेंट की। इससे पूर्व राजस्थान जैन सभा जयपुर की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप जैन, उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा, कार्यकारिणी सदस्य सुभाष बज, जिनेन्द्र जैन जीतू, चेतन जैन निमोडिया, मनीष सोगानी, भारतभूषण जैन आदि ने मुख्यमंत्री को पुष्प गुच्छ भेंट कर अभिनंदन एवं स्वागत किया।

कार्यक्रम में राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि इससे पूर्व मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा गुरुवार को प्रातः 8.45 बजे एस एफ एस के श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर जैन पहुंचे।

मुख्यमंत्री द्वारा मंदिर दर्शन के बाद आचार्य सुन्दर सागर महाराज एवं आचार्य शशांक सागर मुनिराज को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया एवं मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय में पधारने एवं धर्म सभा में मंगल आशीर्वचन देने हेतु निवेदन किया। इस मौके पर आचार्य सुन्दर सागर महाराज एवं आचार्य शशांक सागर मुनिराज ने अपनी पिच्छिका से मुख्यमंत्री को आशीर्वाद प्रदान किया।

मुख्यमंत्री एवं सभी राजनेता दोनों आचार्य संघ के साथ बैण्डबाजों के साथ पैदल विहार करते हुए विशाल जुलूस के रुप में मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय पहुंचे जहां आचार्यश्री ससंघ की भव्य अगवानी की गई। मार्ग में भगवान महावीर के जयकारों से आसपास का वातावरण गुंजायमान हो उठा। कार्यक्रम में प्रशासनिक समन्वयक एडवोकेट महावीर सुरेन्द्र जैन ने बताया कि कैम्प कार्यालय में प्रातः 9.00 बजे से धर्म सभा का शुभारंभ हुआ, जिसमें सुरम्यमति माताजी द्वारा मंगलाचरण किया गया। चित्र अनावरण, दीप प्रज्जवलन के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के साथ मुनि भक्त अशोक चांदवाड ने आचार्य सुन्दर सागर महाराज के पाद पक्षालन कर पुण्यार्जन किया। तत्पश्चात दोनों ने आचार्य श्री को जिनवाणी भेंट की।

इससे पूर्व सुलक्ष्यमति माताजी ने भी मंगल उद्बोधन में जैन धर्म के महत्व पर प्रकाश डाला। धर्म सभा के अन्त में सहकारिता मंत्री गौतम कुमार दक ने सभी का आभार व्यक्त किया।

निर्यापक श्रमण श्री योगसागर जी (ससंघ) के श्री चरणों में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया

मराठी मन से निकली धर्म चर्चा, केंद्रीय मंत्री सिंधिया और निर्यापक मुनिश्री योग सागरजी की मातृभाषा में चर्चा, जैन सिद्धांतों पर हुआ मनोगत

पुनीत जैन

गुना, 28 नवंबर 25। जयोस्तु मराठा यह गौरव और संस्कार तब और गहरे हो जाते हैं जब राष्ट्र सेवा और धर्म साधना के शीर्ष व्यक्तित्व एकाकार होते हैं। दरअसल जैन समाज द्वारा आयोजित एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान में मराठा साम्राज्य के प्रतिष्ठित वंशज और केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने निर्यापक मुनिश्री योग सागरजी महाराज के दर्शन किए। महाराष्ट्र-कर्नाटक के सीमावर्ती क्षेत्रों से ताल्लुक रखने वाले और जिनकी शिक्षा मराठी एवं कन्नड़ भाषाओं में हुई है, ऐसे मुनिश्री और ग्वालियर के मराठा राजवंश के सिंधिया जी की यह भेंट केवल औपचारिक नहीं, बल्कि मातृभाषा मराठी में हुई एक आत्मीय चर्चा के कारण अविस्मरणीय बन गई। यह भेंट इसलिए विशेष बन गई क्योंकि एक राष्ट्रीय संत और एक राष्ट्रीय नेता, दोनों ने अपनी साझी मातृभाषा मराठी में अत्यंत आत्मीय और विस्तृत चर्चा की।

जानकारी के अनुसार गौशाला प्रांगण में संजीव भैयाजी कटंगी के निर्देशन में आयोजित शांतिनाथ महामंडल विधान में जब केंद्रीय मंत्री सिंधिया पहुंचे और मुनिसंघ को श्रीफल भेंट किया तो वहां मौजूद श्रद्धालुओं ने इस ऐतिहासिक क्षण को देखा लेकिन जब दोनों ने अपनी मराठी भाषा में विस्तृत चर्चा शुरू की तो आसपास जमा जैन भक्तों और अन्य लोगों की निगाहें मुस्कान के साथ उन पर टिक गई। केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने काफी देर तक मराठी में ही मुनिश्री के स्वास्थ्य और धर्म की प्रभावना की जानकारी ली। वहीं बाद में जनसभा को हिन्दी में संबोधित करते हुए कहा कि जैन धर्म के दो मूलभूत सिद्धांतों जियो और जीने दो तथा क्षमावाणी को अपने जीवन का आधार बताया। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक भारतीय इन सिद्धांतों को अपना ले तो हमारा देश निश्चित रूप से स्वर्ग बन जाएगा। सिंधिया जी ने याद किया कि उन्होंने मात्र आठ वर्ष की उम्र में अपने पिता से प्रेरणा लेकर इन सिद्धांतों को अपनाया था और ग्वालियर के जैन मंदिर में भगवान को नमस्कार किया था। उन्होंने गर्व से बताया कि यही शिक्षा और सिद्धांत उन्होंने अपने पुत्र को भी दिए हैं। इस महत्वपूर्ण अवसर पर, ब्रह्मचारी संजीव भैयाजी ने जैन संत आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के महान उपकारों को रेखांकित करते हुए केंद्रीय मंत्री के समक्ष कई महत्वपूर्ण मांगें रखीं। इनमें आचार्य श्री को भारत रत्न से सम्मानित करने और उनके नाम पर एक डाक टिकट जारी करने की मांग प्रमुख थी। इसके अतिरिक्त, जबलपुर-रायपुर इंटरसिटी ट्रेन का नामकरण आचार्य विद्यासागर इंटरसिटी ट्रेन करने, गौशाला में जलभराव से गायों को बचाने के लिए पुलिया निर्माण करने और गायों की चिकित्सा हेतु डॉक्टर की सेवा सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इन सभी मांगों को ध्यान से सुना और उन्हें शीघ्र ही पूरा करने का आश्वासन दिया, जिससे जैन समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई। कार्यक्रम का संचालन अभिजीत गोयल ने किया और अनिल अंकल ने आभार व्यक्त किया।

सुसंस्कारों से ही जीवन मूल्यों की सुरक्षा संभव

संपादकीय

संस्कृति कोई इतिहास का दस्तावेज नहीं जो पढ़ने के लिए सुरक्षित रखा जाए। यह उन मूल्यों की गाथा है जो युगों-युगों से चलती आयी है और युगों तक चलती रहेगी। हर राष्ट्र व जाति की अपनी-अपनी संस्कृति होती है जो उसकी परंपराओं, रीति-रिवाजों व सिद्धान्तों के साथ-साथ आकार-प्रकार लेती रहती है। फिर भी हर संस्कृति के कुछ अपने मानक मूल्य होते हैं। यह कहते हुए कदापि संकोच नहीं कि भारतीय संस्कृति अपने आधार बिन्दुओं के कारण ही सदैव विश्व में शीर्ष स्थल स्थान पर रही है। इसमें मानव कल्याण, सेवा, त्याग, आत्म-बलिदान, समता-प्रेम, करुणा, अपरिग्रह आदि भावों को प्रमुख स्थान दिया गया है। यह संस्कृति आदर्श समाज संरचना की बात कहती है और उसके लिए परम आवश्यक तत्व मानती है आदर्श, सुशभ्य व्यक्ति का निर्माण। भारतीय संस्कृति का अपना गौरवशाली इतिहास है। सात सौ वर्ष अंग्रेजी की विदेशी हुकूमत के अधीन रहकर भी इस संस्कृति ने अपने स्वरूप को संजोए रखा। इसकी यह विशेषता रही कि यह दूसरी संस्कृतियों के गुणों को शनैः शनैः आत्मसात् करती है एवं पोषक तत्वों से दूसरों को समृद्ध करती है।

आज जबकि संचार एवं यातायात के विकास के साथ-साथ विश्व की दूरियां सिमटकर एक छोटे दायरे में आ गयी हैं। परस्पर संस्कृतियों के मिलन के अवसर भी अति सुलभ हो गए हैं। विभिन्न संस्कृतियों के अनेक तत्व एक दूसरे में समाहित होते जा रहे हैं। विश्व संस्कृति के रूप में वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति एवं विश्व अर्थिक नीति का विकास हो गया है। एक ओर हमारा जीवन भौतिक-वैभव से परिपूर्ण हुआ है वहीं दूसरी ओर ज्ञान और विज्ञान के विकास ने हमारे स्वास्थ्य जीवन मूल्यों पर प्रहार कर दिया है। कुछ ऐसा प्रभाव भारतीय जन-जीवन पर पड़ा कि हम अपनी वैचारिक दुर्बलता के कारण अपनी ही संस्कृति के प्रति अनास्थावान होते जा रहे हैं। विदेशी संस्कृति को आत्मसात करने की प्रवृति ने हमारे विवेक को समाप्त कर दिया है। हम अच्छे व बुरे के अंतर को भूलते जा रहे हैं। हम एक ऐसी संस्कृति की ओर मुड़ गए हैं जो पूर्णतः अति व्यक्तिवादी है, जो अर्थ और भोग को तो जानती है किन्तु त्याग और सहभागिता के मायने नहीं जानती। आज का युवा वर्ग उपभोग के उत्तम वैज्ञानिक उपकरणों व अच्छे ब्रांड की वस्तुओं को जुटाने के लिए चोरी, डकैती, अपहरण कुछ भी करने को तैयार है। अमेरिका जहां सारी दुनिया की नजर टिकी हैं, जो प्रतिभाशाली व्यक्तियों का केन्द्र है, वैज्ञानिक प्रगति के कारण इस दुनिया में महाशक्ति रूप में उभर कर आया है, आज उसका वैश्वीकरण प्रगति के कारण इस दुनिया में महाशक्ति के रूप में उभर कर आया है। आज उसका समाज वैश्वीकरण के मायाजाल में खो गया है। अंदर से स्वयं खोखला और विकृत समाज क्या दूसरों को सही मार्ग दिखा सकता है ? कहीं ऐसा न हो कि विज्ञान के आविष्कार निर्माण की बजाए विध्वंस पर केद्रित हो जाएं और इस विश्व संस्कृति का विलय हो जाए, मानव दानव बनकर स्वयं अपने ही निर्माणों से असंस्कृत और असभ्य बन जाए। अंधानुकरण और अविवेक हमें त्रिशंकु की तरह अधर लटकने को मजबूर कर दें। सूर्य की आलोक प्रदायिनी किरणें से पौधे को चाहे जितनी जीवन शक्ति मिले, किन्तु अपनी जमीन और जड़ों के बिना पकड़े विदेशी संस्कृति को आत्मसात् करने का स्वप्न देखना भी पैरों तले से जमीन खींचकर आसमान में लटकने जैसा ही है। अविवेकपूर्ण अनुकरण और कुछ नही, अज्ञान का पर्याय है। भारतीय संस्कृति वैज्ञानिक युग की प्रगति को स्वीकार करते हुए भी विज्ञान को विनाश की ओर जाने से निरंतर रोकने का प्रयास करती रही है। अतः इसके आदर्श समन्वय और संतुलन की रक्षा की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। यह संस्कृति ज्ञान-विज्ञान के विकास में आस्था रखती हुई जीवन में अगाध विश्वास रखती है। 'जीओ और जीने दो' हमारी संस्कृति का मूलाधार है। यदि हमें हमारी संस्कृति की नींव को सुदृढ़ बनाना है तो हमें संस्कार निर्माण की ओर विशेष ध्यान देना होगा। जब तक व्यक्ति में संस्कारों का पल्लवन न हो तब तक हम अपने अतीत की गौरवशाली परंपरा को अक्षुण्ण नहीं रख सकते, न ही स्वस्थ समाज व राष्ट्र के निर्माण की बात कर सकते।

- कपूर चन्द जैन पाटनी
प्रधान सम्पादक

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Padam Chand Jain (Dhakra)
(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)
Mahendra Kumar Jain (Dhakra)
(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain (Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch
Pradeep Commercial Interprises
(Iron & Steel Merchants)
56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001
Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.
Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522
ASSOCIATE :
Shanti Enterprises
Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

जैन समाज के लिए आत्मचिंतन का समय

सोशल मीडिया ने समाज को संवाद और सम्पर्क की नई शक्ति दी है। जैन समाज भी इससे लाभान्वित हुआ है। प्रवचनों का सीधा प्रसारण, धर्मग्रंथों का अध्ययन, प्रेरक संदेश और तीर्थों की जानकारी - यह सब एक क्लिक पर उपलब्ध है। विदेशों में रहने वाले जैन परिवार भी इससे अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं।

सोशल मीडिया - वरदान या संकट?
आज सोशल मीडिया संवाद और सूचना का सबसे सशक्त साधन बन गया है। इसके माध्यम से धर्मचर्चा, संस्कृति का संरक्षण और प्रवचनों का प्रसार सहजता से हो सकता है। लेकिन जब यही मंच आपसी विवाद और आरोप-प्रत्यारोप का अखाड़ा बन जाए, तो यह न केवल समाज को भीतर से कमजोर करता है बल्कि बाहर की दुनिया के सामने उपहास का कारण भी बनता है।

जग हँसाई बनाम जग प्रेरणाः हाल के दिनों में देखा गया है कि जैन समाज के आंतरिक मतभेद, आचार्यों और संतों के प्रति असहमति या संगठनात्मक खटास सीधे सोशल मीडिया पर उछाली जा रही है। परिणाम यह होता है कि जैनेतर समाज इसे देखकर हँसी और उपेक्षा करता है। हमारी धार्मिक छवि धूमिल होती है। युवा पीढ़ी भ्रमित होकर दूर होती जाती है। घर के झगड़े कभी चौपाल पर नहीं गिनाए जाते। लेकिन जब वे खुले मंच पर रखे जाते हैं तो जग प्रेरणा बनने वाला समाज जग हँसाई का कारण बन जाता है। अपने ही गुरुओं का अपमान करके हम जग को कौन सा संदेश देना चाहते हैं? सबसे ज्यादा पढ़ी-लिखी समझी जाने वाली अहिंसक समाज आखिर कहां जा रही है? चिंतन तो करना होगा!

संयमित दृष्टि ही समाधानः जैन धर्म हमें सिखाता है - अहिंसा, संयम और समता। यदि हम अपने ही विवादों में संयम खोकर सोशल मीडिया पर कटुता फैलाएँगे, तो यह उन मूल्यों के विपरीत होगा जिन पर जैन संस्कृति खड़ी है। आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने स्पष्ट कहा था - ''संयम ही साधना है और साधना ही समाज की असली शक्ति।''

सकारात्मक उपयोग की दिशाः संवाद के मंच - विवाद सोशल मीडिया पर नहीं, समाज के भीतर संवाद और विमर्श से सुलझाए जाएँ। सकारात्मक पोस्ट - धर्मज्ञान, प्रेरक साहित्य और संतों का संदेश साझा किया जाए।

युवा पीढ़ी का मार्गदर्शनः उन्हें यह सिखाया जाए कि सोशल मीडिया संस्कार बाँटने का साधन है, विवाद फैलाने का नहीं।

मर्यादा का पालनः असहमति भी संयमित और मर्यादित भाषा में होनी चाहिए। आज की पीढ़ी सोशल मीडिया से सबसे अधिक प्रभावित होती है। यदि वे धर्म से जुड़े प्रेरक संदेश देखेंगे तो उन्हें जैन संस्कृति पर गर्व होगा। पर यदि उन्हें केवल विवाद और कटुता दिखेगी, तो वे दूर होते जाएँगे इसलिए यह हमारी जिम्मेदारी है कि सोशल मीडिया को 'संस्कार और संस्कृति का मंच' बनाकर प्रस्तुत करें।

आवश्यक है कि दुकटु वचन और आरोप-प्रत्यारोप से बचें। असहमति को संवाद और प्रमाण के आधार पर रखें। संतों और गुरुओं के प्रति श्रद्धा को हर हाल में बनाए रखें। सकारात्मक संदेश, धर्मज्ञान और प्रेरक साहित्य को ही साझा करें।

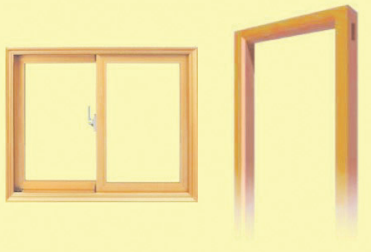

निष्कर्षः सोशल मीडिया हमारे हाथ में रखा औजार है। सदुपयोग करेंगे तो यह समाज की शक्ति बनेगा, दुरुपयोग करेंगे तो यह दुर्बलता का कारण बनेगा। आज आवश्यकता आत्मचिंतन की है।

यदि हम अपने मतभेदों को सोशल मीडिया पर जगजाहिर करेंगे तो जैनेतर समाज में जग हँसाई ही होगी। परंतु यदि हम इसे धर्म और संस्कृति के प्रसार का माध्यम बनाएँगे, तो यही मंच जैन समाज को जग प्रेरणा का स्रोत बना देगा।

घर की दीवारें जब गिरतीं,
बाहर वाले हँसते हैं,
विवेक खोकर बोल पड़े,
अपनों से ही बसते हैं।

- डॉ. सुनील जैन 'संचय' ललितपुर, सह सम्पादक

अधिक की भूख थोड़े में भी सुखी नहीं रहने देती है

यह उनके आचार्य का मंदिर, वह हमारे आचार्य का मंदिर - समाज में बढ़ती विभाजन की प्रवृत्ति और उसका समाधान

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

प्रस्तावना - जैन धर्म, विशेषकर दिगंबर परंपरा, अपने मूल स्वरूप में एकता, सत्य, अहिंसा, संयम और आत्ममुक्ति का मार्ग है। यह वह धर्म है जो आत्मा की शुद्धि में विश्वास रखता है, जहाँ बाहरी विभाजनों से अधिक भीतर की जागृति महत्वपूर्ण है। गुरु, शिष्य और संघ मिलकर धर्म की वह त्रिवेणी बनाते हैं जो साधना, संस्कृति और सामाजिक समरसता को एक सूत्र में पिरोती है। महावीर स्वामी ने ''सर्वे जीवा मित्ती मे'' सभी जीव मेरे मित्र हैं का संदेश देकर यह स्पष्ट कर दिया था कि विभाजन नहीं, बल्कि सद्भाव ही धर्म का आधार है परंतु विडंबना यह है कि जिस समाज ने त्याग, वैराग्य और एकात्मता को जीवन का आधार बनाया था, आज वही समाज गुटबाजी और आचार्य-भेद की दिशा में बढ़ता जा रहा है। यह परिवर्तन जितना दुखद है, उतना ही चिंताजनक भी।

आज समाज में एक भाव तेजी से उभर रहा है - ''यह हमारे आचार्य का मंदिर, वह उनके आचार्य का मंदिर।'' यह वाक्य केवल शब्द नहीं, बल्कि समाज के भीतर बढ़ती दूरी की पीड़ा को दर्शाता है। दिगंबर समाज में कई महान आचार्य हुए - आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज, आचार्य विद्यासागर जी महाराज, आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज, आचार्य पुष्पदंत सागर जी महाराज, आचार्य प्रशांतसागर जी महाराज आदि जिन्होंने अपने-अपने तरीके से धर्म का प्रचार-प्रसार किया, साधना को मजबूत किया और असंख्य लोगों को संयम, सेवा और सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ाया परंतु इन आचार्यों के नाम पर अलग-अलग मंदिर, अलग-अलग क्षेत्र, अलग-अलग समूह क्या यही धर्म का लक्ष्य था?

क्या यह वही आदर्श है जिसके लिए संन्यासियों ने पूरे जीवन में एक पायदान भी साथ में नहीं रखा, सांसारिक मोह को त्याग दिया?

सच्चाई यह है कि गुरु धर्म का केंद्र हैं, पर धर्म किसी एक गुरु की संपत्ति नहीं। जिस प्रकार सूर्य की रोशनी सभी के लिए समान है, उसी प्रकार गुरु भी समस्त समाज के लिए होते हैं न किसी परिवार के, न किसी गुट के, न किसी भौगोलिक सीमा के। गुरु का उद्देश्य अनुयायियों की संख्या बढ़ाना नहीं, आत्मज्ञान की दिशा दिखाना है लेकिन जब समाज अनुयायियों को ''हमारे'' और ''तुम्हारे'' के दायरे में बाँटना शुरू कर देता है, तो धर्म बिखरने लगता है, आस्था सीमित हो जाती है और समाज का ध्यान आत्ममुक्ति से हटकर बाहरी प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित हो जाता है। धर्म का विकास आचार्य-भेद से नहीं, आचार्य-एकता से होता है। मंदिर अगर बनें, तो किसी एक व्यक्ति के नाम पर नहीं, जैन धर्म के नाम पर। यात्रा अगर हो, तो किसी एक पंथ के लिए नहीं पूरे समुदाय के लिए। भक्ति अगर हो, तो किसी एक संत तक सीमित नहीं - सभी महान साधकों के प्रति समान आदर के साथ। यह याद रखना आवश्यक है - आचार्य का सम्मान तब सर्वोच्च होता है, जब उनके जीवन और सिद्धांतों पर चलकर समाज में एकता की स्थापना हो। अगर आचार्य के नाम पर समाज विभाजित होता है, तो वहाँ सम्मान नहीं, बल्कि मोह की परछाई होती है।

आज आवश्यकता यह नहीं कि कितने मंदिर बने, कितने तीर्थों के उद्घाटन हुए या किस संत के कितने अनुयायी हैं, आज की आवश्यकता है - समाज एक हो, भक्ति एक हो, उद्देश्य एक हो - आत्मकल्याण और धर्म की रक्षा जब गुरु, शिष्य और संघ पुनः एक सूत्र में बंधेंगे तभी दिगंबर परंपरा विश्व में आदर्श रूप में चमकेगी।

आइए संकल्प लें कि - आचार्य अनेक हो सकते हैं, पर धर्म एक ही रहेगा - जैन धर्म। मंदिर अनेक हो सकते हैं, पर भावना एक ही रहे - सम्यकदर्शन। अनुयायी अनेक हो सकते हैं, पर मार्ग एक ही रहे - मोक्ष। यही महावीर का संदेश है, यही दिगंबर परंपरा की आत्मा है और यही भविष्य का मार्ग भी। एकता ही धर्म है - विभाजन नहीं। जैन धर्म का मूल सार - एकता और आत्ममुक्ति। जैन दर्शन का मूल तत्व यह है कि आत्मा अपने कर्मों से बँधी है और उसे मुक्त करने का मार्ग सम्यकदर्शन, सम्यक ज्ञान, और सम्यक आचार से ही संभव है। यह धर्म कभी भी व्यक्ति-पूजा का नहीं रहा, बल्कि तत्व-पूजा का धर्म है। भगवान महावीर ने कहा था - ''नाहं देहे, न मम देहो।'' (आचारांग सूत्र) अर्थात आत्मा न शरीर में है, न शरीर आत्मा का है। इस सिद्धांत के अनुसार गुरु की पूजा उनके शरीर या नाम के लिए नहीं, बल्कि उनके गुणों के लिए होनी चाहिए। परंतु आज स्थिति उलटी हो गई है। अब भक्ति भाव की जगह आचार्य-भक्ति की राजनीति और संघों की प्रतिस्पर्धा ने धर्म की आत्मा को कमजोर कर दिया है।

विभाजन की जड़ - ''हमारे और उनके'' की भावना: आज जैन समाज में एक अनकही दीवार खड़ी हो गई है। कहीं कहा जाता है - ''यह हमारे आचार्य का मंदिर है, वहाँ मत जाओ'', तो कहीं सुनाई देता है - ''वह उनके मुनि हैं, उनसे दीक्षा मत लो।'' यह प्रवृत्ति समाज को टुकड़ों में बाँट रही है। कभी जिनालय और तीर्थ एकता के प्रतीक हुआ करते थे, जहाँ हर साधु-संत, हर संघ का स्वागत होता था। परंतु अब वही तीर्थ ''गुरु-आधारित'' हो गए हैं। कहीं किसी आचार्य के शिष्यों का तीर्थ, कहीं किसी मुनि संघ का विश्रामस्थल। जिनालयों में भी अब विभाजन की रेखा खींच दी गई है। जहाँ पहले लिखा होता था ''सर्व साधु-संतों का स्वागत है'', वहाँ अब अनकहे शब्दों में यह संदेश फैल चुका है - ''केवल हमारे संघ के साधु-संतों का स्वागत है।'' यह स्थिति अत्यंत दुखद है क्योंकि धर्म जहाँ विभाजन सिखाने लगे, वहाँ मुक्ति असंभव हो जाती है।

गुरु-भक्ति बनाम गुरु-अंधभक्ति - गुरु-भक्ति जैन धर्म की आत्मा है। गुरु ही वह माध्यम हैं जो हमें आत्मा की ओर ले जाते हैं परंतु जब भक्ति विवेक खो देती है, वह अंधभक्ति बन जाती है। आचार्य कुंदकुंद ने कहा - ''गुरु वह है जो आत्मा का मार्ग दिखाए, न कि आत्मा को अपने नाम से बाँध दे।'' आज यही सबसे बड़ा खतरा है लोग गुरु को नहीं, गुरु के नाम और संगठन को पूजने लगे हैं। गुरु के उपदेशों से अधिक, उनके ब्रांड नाम का प्रभाव बढ़ गया है। यह आध्यात्मिकता नहीं, बल्कि संस्थागत अहंकार है।

आचार्य-परंपरा का सही अर्थ - दिगंबर परंपरा में आचार्य का स्थान सर्वोच्च है। वे संयम, तप, और त्याग के प्रतीक हैं। लेकिन आचार्य का सम्मान इस बात पर निर्भर नहीं करता कि उन्होंने कितने मंदिर बनवाए या उनके नाम पर कितने तीर्थ हैं, बल्कि इस पर निर्भर करता है कि उन्होंने कितने आत्माओं को संयम का मार्ग दिखाया। आज आवश्यकता है यह समझने की कि आचार्य परंपरा 'सत्ता' नहीं, 'संयम' की परंपरा है। आचार्य का कार्य संघों को जोड़ना है, न कि बाँटना। उनकी प्रेरणा से समाज में त्याग, सेवा और करुणा का विस्तार होना चाहिए, न कि गुटबाजी और प्रतिस्पर्धा।

तीर्थों का उद्देश्य क्या है? - तीर्थ शब्द का अर्थ है - ''वह स्थान जो आत्मा को संसार-सागर से पार कराए।'' लेकिन आज अनेक स्थानों पर तीर्थों का अर्थ बदल गया है। अब तीर्थ गुरु-समर्थन केंद्र, संघ-प्रचार स्थल या आर्थिक प्रतिष्ठा के प्रतीक बनते जा रहे हैं। कई स्थानों पर तीर्थ निर्माण के पीछे भावना यह नहीं होती कि ''यहाँ से आत्मिक उन्नति होगी'', बल्कि भावना यह होती है कि ''हमारा संघ भी पीछे न रह जाए।'' परंतु इतिहास गवाह है - महान तीर्थ श्री समेटशिखरजी, श्री श्रवणबेलगोला, हस्तिनापुर, सोनागिरी, नंदीश्वर द्वीप आदि किसी एक आचार्य के नहीं, बल्कि समस्त जिन-शासन के प्रतीक हैं। इन तीर्थों में कोई विभाजन नहीं, वहाँ केवल 'जिन धर्म' की गूँज सुनाई देती है।

विभाजन के परिणाम - समाज में जब 'हमारे और उनके' की भावना आती है, तो धर्म की एकता, श्रद्धा और विश्वसनीयता तीनों पर आघात होता है।

1. श्रद्धालुओं में भ्रम - लोग समझ नहीं पाते कि सच्चा धर्म क्या है, गुरु का नाम या जिनवाणी का संदेश?
2. संघों में प्रतिद्वंद्विता - मुनि-महात्मा भी अनजाने में प्रतिस्पर्धा के पात्र बन जाते हैं।
3. युवाओं का मोहभंग - आज की पीढ़ी इन गुटबाजियों से दूर हो रही है। उन्हें यह धर्म नहीं, राजनीति लगने लगी है।
4. धर्म की छवि धूमिल होना - जब बाहरी समाज देखता है कि जैन एक-दूसरे के मुनियों को नहीं मानते, तो जैन धर्म की वैश्विक छवि कमजोर होती है।

आवश्यक आत्ममंथन - अब समय आ गया है कि जैन समाज गंभीर आत्ममंथन करे। क्या यह उचित है कि हम गुरु के नाम पर समाज बाँट दें? क्या हम भूल गए कि महावीर स्वामी ने किसी संघ का नहीं, केवल आत्मा का मार्ग दिखाया था? हमें यह समझना होगा कि - ''गुरु बदल सकते हैं, परंतु धर्म नहीं।'' गुरु हमें मार्ग दिखाते हैं, पर मार्ग सदैव जिनवाणी का होता है।

समाधान की दिशा -

1. सर्व-संघ तीर्थ परंपरा - हर तीर्थ ऐसा हो जहाँ सभी आचार्यों और मुनियों का स्वागत हो। तीर्थों पर केवल 'जिनेश्वर' की मूर्ति हो, गुरु का स्मारक केवल प्रेरणा स्थल हो।
2. गुरु की शिक्षा पर केंद्रित होना - उनके नाम पर नहीं, बल्कि उनके उपदेशों पर चलना ही सच्ची श्रद्धा है।
3. संघों के बीच संवाद - सभी संघों के प्रतिनिधि मिलकर एक ''जिनधर्म एकता परिषद्'' जैसी संस्था बनाएं, जो मतभेदों को संवाद से सुलझाए।
4. युवा शक्ति को जोड़ना - युवाओं को यह सिखाया जाए कि धर्म व्यक्ति का नहीं, विचार का होता है।
5. गुरुजनों की पहल - यदि मुनि और आचार्य स्वयं यह संदेश दें कि ''हम सब एक जिनसंघ के अंग हैं,'' तो समाज स्वतः एक हो जाएगा।

प्रेरणा स्वरूप उदाहरण - आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज, आचार्य विद्यासागर जी महाराज, आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज जैसे संतों ने कभी समाज को बाँटने का नहीं, बल्कि जोड़ने का कार्य किया। आचार्य ज्ञानसागर जी के शब्द थे - ''संघ की शोभा उसकी एकता से होती है, भेद से नहीं।'' इसी प्रकार आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने भी बार-बार कहा है - ''जिनशासन में किसी का विरोध नहीं, केवल आत्मशुद्धि का मार्ग है।''

निष्कर्ष - आज जैन समाज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ चिंतन और आत्ममंथन दोनों आवश्यक हो गए हैं। यह धार्मिक समृद्धि का नहीं, बल्कि धर्म के दुर्भाग्य का संकेत है कि और गुटबाजी के केंद्र बनते जा रहे हैं। यह स्थिति न केवल आस्था को आहत करती है, बल्कि दिगंबर परंपरा की उस मूल भावना के विपरीत भी है जिसने सदियों तक समाज को जोड़े रखा।

जिनवाणी का स्पष्ट संदेश है -

''सर्वे पंच परमेष्ठिनः, सर्वे जिनशासनहिताय कार्यरताः।''

अर्थात सभी पंच परमेष्ठि, सभी आचार्य, सभी ऋषि, सभी मुनि, सभी आर्यिकाएँ और सभी साधु/साध्वियाँ जिनशासन के हित में हैं, उनमें कोई भेद नहीं। यदि जिनवाणी में भेद नहीं, तो अनुयायियों में भेद कैसे स्वीकार्य हो सकता है? समाज को आगे बढ़ना है तो एकता ही एक मात्र मार्ग है। हमें संकल्प लेना होगा कि - अब कोई ''हमारा आचार्य'' या ''उनका आचार्य'' नहीं होगा, सभी ''जिनधर्म के आचार्य'' होंगे। तीर्थ केवल भक्ति और वास्तुकला के केंद्र न रहें, बल्कि एकता, शांति और आत्म कल्याण के प्रेरक स्थल बनें। धर्म तभी जीवित रहेगा जब समाज आपसी मतभेद छोड़कर साथ खड़ा होगा क्योंकि सत्य यही है - जहाँ विभाजन है, वहाँ मुक्ति नहीं, जहाँ एकता है, वहाँ मोक्ष का प्रकाश है। आइए इस प्रकाश को बचाए रखें। आइए भक्ति से पहले भेद भूलें, और आचार्य के नाम से पहले धर्म के नाम को रखें। इसी में जैन समाज की शक्ति, जैन संस्कृति का भविष्य और मोक्षमार्ग का वास्तविक उत्थान निहित है।

मास्टर ओनिक जैन ने टी-सीरीज अकैडमी नोएडा में आयोजित संगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया

प्रकाश पाटनी, संवाददाता, भीलवाड़ा

भीलवाड़ा, 4 दिसंबर। भीलवाड़ा के मास्टर ओनिक जैन ने टी-सीरीज अकैडमी नोएडा में नोएडा में आयोजित संगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर भीलवाड़ा जिले का नाम रोशन किया।

पंकज जैन ने बताया कि मास्टर ओनिक जैन को अकादमी द्वारा STAR KID के सम्मान से नवाजा गया। मास्टर ओनिक पिछले 6 वर्ष से शास्त्रीय संगीत सीख रहे हैं। इनके गुरु श्री विद्या शंकर किन्नरया भीलवाड़ा रहे हैं। वर्तमान में अभी टी-सीरीज अकैडमी नोएडा में अपना संगीत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। ओनिक पूर्व में भी कई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। साथ ही भारत मंडपम देहली में भी अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं। मास्टर ओनिक ने अपनी सफलता का श्रेय पूज्य गुरुदेव निर्यापक मुनिपुंगव सुधा सागर महाराज के आशीर्वाद एवं संगीत गुरुओं एवं परिवार को दिया। मास्टर ओनिक जैन कार्यक्रम में निर्णायक गुरु संजय विद्यार्थी और इंद्रेश जी मिश्रा (टी-सीरीज) रहे।

जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7505102419 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ,
मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419,
Email- jaingazette2@gmail.com
www.jaingazette.com

श्री भारतवर्षीय खंडेलवाल दिगंबर जैन महासभा (पूर्वांचल समिति) द्वारा निः शुल्क मेगा स्वास्थ्य जाँच शिविर

समाजसेवा की दिशा में एक प्रेरणादायक एवं ऐतिहासिक पहल

डॉ. संतोष जैन 'काला'
सी. ए, गुवाहाटी

गुवाहाटी, 30 नवम्बर 2025। आज के युग में जहाँ जीवन की भागदौड़, तनाव और अस्वस्थ जीवन शैली ने स्वास्थ्य को सबसे बड़ी चुनौती बना दिया है, वहीं समाज में ऐसे संगठन और संस्थाएँ भी हैं जो मानव सेवा को अपना सर्वोच्च धर्म मानकर निःस्वार्थ भाव से सेवा के कार्यों में जुटे हुए हैं। इसी कड़ी में श्री भारतवर्षीय खंडेलवाल दिगंबर जैन महासभा (पूर्वांचल समिति) तथा श्री दिगंबर जैन पंचायत, विजयनगर के संयुक्त तत्वावधान में विजयनगर के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में पाँच दिवसीय निःशुल्क मेगा स्वास्थ्य जाँच शिविर सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। यह शिविर मानवता, करुणा, स्वास्थ्य जागरूकता और समाजसेवा की एक अद्भुत मिसाल बनकर उभरा है।

शिविर का उद्देश्य ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों तक पहुँचकर उन लोगों को चिकित्सा सहायता प्रदान करना था जो दूरस्थ स्थानों या आर्थिक कारणों से समय पर उचित उपचार प्राप्त नहीं कर पाते। इस पूरे आयोजन में सेवा की भावना सर्वोच्च रही, न कोई शुल्क, न कोई औपचारिकता और न ही कोई भेदभाव। हर आयु वर्ग के लोगों के लिए उपचार, जाँच और परामर्श पूरी गरिमा और प्रेमपूर्वक उपलब्ध कराया गया।

''पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच'' द्वारा आयोजित निः शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर बी. डी. जी. रमेश गोयल संस्थान तथा एम.वाई. एम. संयोजिका श्रीमती अंजलि जैन बिनायक्या के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है।

स्वास्थ्य शिविर – पाँच दिनों की सेवा यात्रा:
विजयनगर टाउन से निकटवर्ती अलग-अलग गाँवों में पाँच दिनों तक यह शिविर निरंतर आयोजित किया गया। जिन गांवों में शिविर लगे, उनकी तिथि और विजयनगर से दूरी निम्नानुसार रही -

26.11.2025 - रांगामाटी - 4 किमी
27.11.2025 - सातपोखली - 7 किमी
28.11.2025 - नोहिरा (कुलदुंग) - 7 किमी।
29.11.2025 - धोनतोला - 6 किमी
30.11.2025 - मोनीयारी तिनियाली - 6 किमी।

इन शिविरों में हर दिन सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण एवं शहरी लोग पहुंचे और चिकित्सा से संबंधित विशेषज्ञ सेवाओं का लाभ उठाया।

आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से युक्त मेगा शिविर – शिविर में उपचार और परीक्षण की सुविधाएँ किसी बड़े अस्पताल से कम नहीं थीं। लोगों के लिए अत्याधुनिक मेडिकल बस स्थापित की गई, जिसमें निम्न सेवाएँ उपलब्ध थीं - दाँत, आँख, कान, गला एवं हृदय संबंधी जाँच, डेंटल ट्रीटमेंट, आई टेस्टिंग, ईएनटी टेस्टिंग, एक्स-रे एवं ईसीजी, पैथोलॉजिकल लैब टेस्ट, जनरल ओपीडी एवं चिकित्सा परामर्श। विशेषज्ञ डॉक्टरों की सुपरवाइज्ड मेडिकल टीम ने शिविर में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति को समय देकर जाँच की और आवश्यक दवाएँ तथा परामर्श निःशुल्क उपलब्ध कराया।

शानदार भागीदारी – 1500 से अधिक लाभार्थी: शिविर में वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं, युवाओं और बच्चों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। बढ़ती भीड़ इस बात का प्रमाण थी कि स्वास्थ्य सेवाओं की आवश्यकता कितनी महत्वपूर्ण है और जनता इस प्रयास से कितनी प्रभावित हुई। पाँच दिनों में लगभग 1500 लोगों ने स्वास्थ्य जांच करवाई, जो इस शिविर की ऐतिहासिक सफलता को दर्शाता है।

नेतृत्व और प्रबंधन – टीमवर्क का उत्कृष्ट उदाहरण: इस विशाल आयोजन के सफल संचालन की जिम्मेदारी डॉ. संतोष जैन 'काला' (सीए), पूर्वांचल कार्याध्यक्ष ने संभाली। उनके मार्गदर्शन ने पूरी टीम को संगठित और ऊर्जावान बनाए रखा। विजयनगर समाज का सहयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। खंडेलवाल कोर कमिटी एवं महिला विंग की सदस्यों ने तन-मन-धन से सहयोग कर शिविर की सफलता सुनिश्चित की। प्रमुख सहयोगियों में - सुभाष बड़जात्या, रामचंद्र सेठी, मनोज काला, अनिल सेठी, सुनील छाबड़ा, महिपाल पाटनी, सुरेश गंगवाल, ललित अजमेरा, अजय बागड़ा, कुसुम छाबड़ा, अंजली बिनायक्या, अल्का जैन, रेखा जैन, प्रियंका पाटनी, शिखा छाबड़ा, पूजा जैन, रितु जैन, स्वेक्षा जैन, नीलम जैन, सुधा जैन, मंजू गोधा, रेनू बकलीवाल, अल्का जैन (केदार रोड), नेहा जैन, विद्या जैन आदि सदस्यों का अतुलनीय सहयोग रहा। इन सभी का समर्पण, मेहनत और टीम भावना इस शिविर की वास्तविक शक्ति रही।

सेवा ही धर्म – समाज की ओर प्रेरक संदेश: आयोजकों ने कहा कि यह शिविर केवल चिकित्सा सेवा का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में यह संदेश देने का प्रयास भी है कि - ''सेवा ही धर्म है और स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है।''

इस प्रकार के आयोजन से समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलती है और मानवीय संवेदनाएँ प्रबल होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में उपचार को सुलभ बनाना ही इस शिविर का मुख्य उद्देश्य था, जो पूर्णतः सफल रहा। आयोजकों द्वारा आश्वासन दिया गया कि भविष्य में भी समय-समय पर ऐसे शिविर लगाए जाते रहेंगे ताकि अधिक से अधिक लोगों को स्वास्थ्य लाभ मिल सके और स्वस्थ समाज का निर्माण आगे बढ़ सके।

समापन संदेश – यह पाँच दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि उस मानवीय सोच का प्रतिनिधित्व है जो कहती है - ''जहाँ पीड़ा है, वहाँ सेवा पहुँचना चाहिए, जहाँ आवश्यकता है, वहाँ समाज साथ खड़ा होना चाहिए''

पूरे आयोजन में सकारात्मक ऊर्जा, सहानुभूति और सेवा का ऐसा सम्मिश्रण देखने को मिला जो आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करेगा।

100वां जन्म दिन डॉक्टर ने बचत के 3.4 करोड़ रुपए दान दिए

पुनीत जैन

भुवनेश्वर। जीवनभर सेवाभाव से महिला रोगियों के लिए समर्पित रहीं ओडिशा की स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. के. लक्ष्मी बाई ने उम्र के 100वें पड़ाव पर महिला कैंसर रोगियों के बेहतर इलाज के लिए एम्स भुवनेश्वर को जीवन भर की बचत दान कर दी। डॉ. लक्ष्मी का कहना है कि इस राशि से महिलाओं में कैंसर के उपचार और देखभाल पर खर्च किया जाए ताकि मेरे जाने के बाद भी मेरा काम लोगों को ठीक करता रहे।

दूदू से मुनि आदित्य सागर जी महाराज के गागरडू गांव में विहार के दौरान विहार में साथ चल रहे हरसोली निवासी पुखराज जी छाबड़ा, राजकुमार दोशी निवासी हरसोली प्रवासी किशनगढ़ नंगे पांव विहार में साथ चलते हुये।

- शेखरचंद पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता

तृतीय वार्षिक भव्य रथयात्रा सम्पन्न

विमल जैन, दिल्ली

वर्धमान आध्यात्मिक संस्थान, पालम विहार, गुरुग्राम में श्री 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर, पालम विहार में आयोजित ''तृतीय वार्षिक भव्य रथयात्रा'' रविवार, 30 नवम्बर को दिव्यता, भक्ति और उत्साह के उच्चतम वातावरण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। संस्थान के अध्यक्ष श्री राकेश कुमार जैन ने बताया कि कायक्रम का आरंभ प्रातः 7:00 बजे अभिषेक, शांतिधारा एवं नित्य-नियम पूजन से शुरू हुआ। सभी मंगल क्रियाओं के पश्चात् रथयात्रा के मुख्य पात्रों का चयन किया गया। ख्वासी के लिए श्रीमान अरूण जैन ठोलिया तथा धन कुबेर के लिए श्री गौरव जी जैन का चयन किया गया। इसके उपरांत विभिन्न संस्थाओं एवं समाजों से पधारे श्रेष्ठीजनों का तिलक, माला एवं पटका पहनाकर सम्मान तथा आगंतुक महानुभावों का हार्दिक अभिनंदन सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सभी धार्मिक क्रियाएँ तथा संविधानिक संरक्षक श्री बॉबी जैन द्वारा झण्डारोहण का मांगलिक क्रिया प्रतिष्ठित प्रतिष्ठाचार्य आदरणीय श्री संतोष जी शास्त्री के मंगल निर्देशन में की गई।

सारथी का चयन कूपन आधारित लकी ड्रा के माध्यम से किया गया। रथयात्रा का शुभारंभ प्रातः 9:30 बजे से शुरू हुआ। श्रीजी का दिव्य रथ मंदिर प्रांगण से रवाना हुआ। यात्रा में आभूषणों से अलंकृत 24 इंद्र इंद्राणियों का भव्य एवं सौंदर्यमय समागम मार्ग भर रंगोली सज्जा, बैंडबाजा शहनाई की मंगल ध्वनियाँ धर्म, अहिंसा, त्याग और करुणा का संदेश देती जीवंत और आकर्षक झांकियाँ प्रदर्शित की गई।

इस पावन यात्रा में इंद्र/इंद्राणियों की शांत, शालीन और दिव्य उपस्थिति ने पूरे मार्ग को आध्यात्मिक आभा से आलोकित कर दिया। इस वर्ष की रथयात्रा में सभी इंद्र/इंद्राणियों को विशेष रूप से मुकुट, मालाएँ, पटका प्रदान कर अलंकृत किया गया। भक्ति ने पूरे आयोजन को विशेष आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान की।

समाज के विभिन्न परिवारों द्वारा अपने-अपने निवास स्थानों पर रथ का अत्यंत भक्ति, प्रेम और आदर से किया गया स्वागत, जिसने इस आयोजन की शोभा को कई गुना बढ़ा दिया। श्रुत ज्ञानी महिला मंडल की शीर्ष नायिका दीपाली जैन जी का इस आयोजन को लेकर बहुत ही उत्कर्ष और प्रशंसनीय भूमिका रही। कार्यक्रम के समापन पर रथयात्रा की मंदिर जी में मंगल वापसी पर, कलश एवं शांतिधारा का आयोजन किया गया। इस सफल आयोजन का संपूर्ण श्रेय हमारी समाज की सामूहिक सहभागिता को जाता है। सकल जैन समाज, पालम विहार के सभी धर्मप्रेमी बंधुओं, माताओं/बहनों, युवक/युवतियों और बच्चों ने जिस एकता, सौहार्द और उत्साह से इस आयोजन को भव्य सफल बनाया, वह वास्तव में प्रशंसनीय और प्रेरणादायी है।

और अंत में सकल दिगम्बर मंदिर प्रबंधन कमेटी ने सभी स्वयंसेवक, युवा शक्ति, महिलाएं, बच्चे तथा समाज के हर वर्ग के सहयोग से इस रथयात्रा को एक ऐतिहासिक, भव्य और अनुकरणीय आयोजन सफल बनाने पर सभी को हृदय से धन्यवाद दिया।

गणिनी आर्यिका सरस्वती माताजी ससंघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह सानंद संपन्न

प्रसिद्ध समाज सेवी नेमप्रकाश-देव प्रकाश खण्डाका परिवार ने गणिनी आर्यिका श्री 105 सरस्वती माताजी को पिच्छिका भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त किया

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 30 नवम्बर। भारत गौरव आचार्य रत्न श्री 108 देशभूषण जी महामुनिराज की सुयोग्य शिष्या गणिनी आर्यिका श्री 105 सरस्वती माताजी ससंघ का 30 नवम्बर को दुर्गापुरा के चंद्रप्रभु जिनालय में सैंकड़ों श्रावकों श्राविकाओं की उपस्थिति में भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह सम्पन्न होने के बाद 32 वां पावन चातुर्मास 2025 का विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजनों के बाद हर्षोल्लास पूर्वक समापन हुआ। उक्त कार्यक्रम में ट्रस्ट के यशस्वी अध्यक्ष प्रकाश चांदवाड एवं मंत्री राजेन्द्र काला ने बताया कि पिच्छिका परिवर्तन समारोह का कार्यक्रम का शुभारंभ दोपहर 1.15 बजे हुआ जिसमें नेमीचंद-मंजू जैन सोनी परिवार जामडोली वालों ने चित्र अनावरण, एवं दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उक्त कार्यक्रम के भोजन पुण्यार्जक शिखरचंद-मनोज कुमार कासलीवाल परिवार रहे, कार्यक्रम में महिला मंडल की संरक्षक चंदा सेठी एवं रानी सोगानी ने बताया कि कायक्रम में महिलाओं द्वारा सुंदर नृत्य प्रस्तुति के साथ मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया तथा विभिन्न परम्पराचार्यों को महिला मंडल द्वारा अर्घ्य अर्पित कर पूजा अर्चना की गई, साथ ही ट्रस्ट समिति सहित आगंतुक अतिथियों द्वारा भी भक्ति भाव से अर्घ्य समर्पित किये गये, सभी भक्तों ने एवं महिला मंडल ने झूमते हुए अष्ट द्रव्यों से गणिनी आर्यिका श्री 105 सरस्वती माता जी की पूजन की, कार्यक्रम में आर्यिका श्री ने अपने मंगलमय आशीर्वचन में श्रद्धालुओं को बताया कि पिच्छिका परिवर्तन में मन का परिवर्तन होना चाहिए, अपने विचारों को परिवर्तित कर संयम की ओर बढ़ने का यह दिन है, पिच्छिका में पांच गुण होते हैं, मृदुता अर्थात कोमलता, सुकुमारता (अहिंसा का पालन), हल्कापन, पसीना ग्रहण न करना और धूल मिट्टी ग्रहण न करना। गणिनी आर्यिका श्री 105 सरस्वती माताजी को सर्वोच्च बोली द्वारा पिच्छिका भेंट करने का सौभाग्य सरदारमल, नेमप्रकाश, देव प्रकाश, संत कुमार सतीश-कल्पना, अशोक कुमार, महेश, मुकेश तथा आदर्श खण्डाका परिवार ने प्राप्त किया तथा आर्यिका श्री 105 अनन्तमती माताजी को पिच्छिका, शास्त्र एवं वस्त्र भेंट करने का सौभाग्य पारस मल, नेमीचंद, नमन कुमार पाटनी परिवार ने प्राप्त किया तथा आर्यिका श्री 105 महोत्सवमती माताजी को पिच्छिका भेंट करने का सौभाग्य हर्षचंद, मनोज कुमार सोगानी परिवार पहाडी वालों ने प्राप्त किया एवं आर्यिका सरस्वती माताजी को शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य भागचन्द, दिनेश कुमार, राकेश कुमार सेठी ने प्राप्त किया। महोत्सव मती माताजी को विमल कुमार-सुशीला देवी राकेश पोद्दार परिवार ने तथा निश्चयमती माताजी को शास्त्र एवं महोत्सव मती माताजी को वस्त्र भेंट करने का एवं आर्यिका संघ का पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य राजेश कुमार जी पंकज कुमार जी, नेहा जी, वैद परिवार ने प्राप्त किया एवं आर्यिका सरस्वती माताजी को वस्त्र भेंट करने का सौभाग्य लाल चन्द, हरीश कुमार, मनीष छाबड़ा परिवार ने प्राप्त किया। निश्चयमती माताजी को वस्त्र भेंट करने का सौभाग्य सुधीर-किरण जी बिलाला को तथा आर्यिका सरस्वती माताजी की आरती करने का सौभाग्य प्रकाश चन्द-मनोरमा जी चांदवाड ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में परम पूज्य आर्यिका श्री 105 निश्चयमती माताजी की मुख शुद्धि की क्रिया सरस्वती माताजी ने भक्ति वाचन करके गणधरवलय के उपवास करने का नियम देकर कराई। कार्यक्रम में पंडित विमल कुमार जी सोगानी बनेठा ने कार्यक्रम को कुशलता पूर्वक संचालित किया। ट्रस्ट की ओर से सभी आगंतुकों अतिथियों में अशोक चांदवाड, सी.एस.जैन, विनोद कोटखावदा, जैन गजट के राजाबाबू गोधा, पुण्यार्जक परिवारजनों का ट्रस्ट के सुनील संगही, नरेश बाकलीवाल, विमल गंगवाल, सतेन्द्र पांड्या, जयकुमार जैन, यश कमल अजमेरा, दिलिप कासलीवाल, नेमी निगोतिया, महावीर चांदवाड ने एवं महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती रेखा लुहाड़िया, मंत्री रानी सोगानी, रेखा पाटनी ने स्वागत सम्मान किया। कार्यक्रम में मंत्री राजेन्द्र काला ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

महिला उद्योग सहयोग कार्यक्रम का हुआ मंचन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 30 नवंबर 2025 (रविवार)। रत्नत्रय महिला जागृति संघ ने पारस विहार जैन मंदिर, मुहाना मंडी में पूज्य मुनि आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज के मंगल आगमन और 64 ऋद्धि विधान के आयोजन के दौरान महिला उद्योग सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए संघ की महिलाओं की आत्मनिर्भरता और व्यावसायिक प्रगति के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया।

कार्यक्रम में संयोजिका श्रीमती खुशबू जैन ने बताया कि संघ द्वारा इस अवसर पर एक विशेष सूचना केंद्र स्थापित किया गया, जिसके माध्यम से महिला उद्योग सहयोग कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई, इसका लक्ष्य उन जैन महिलाओं को मार्गदर्शन और समर्थन देना था, जो घर बैठे व्यवसाय शुरू करना चाहती हैं या अपने कौशल को बढ़ाना चाहती हैं, इसके अतिरिक्त संघ से जुड़ी गृह उद्योग की महिलाओं को अपने हस्तनिर्मित उत्पादों की बिक्री और प्रदर्शन के लिए डिस्प्ले स्टॉल निःशुल्क उपलब्ध कराए गए, जिससे उनकी औद्योगिक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया, संघ की यह पहल धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों के साथ-साथ महिलाओं की औद्योगिक गतिविधियों को प्रबल करने के उनके लक्ष्य को दर्शाती है, संघ ने अपनी सक्रिय भागीदारी से यह संदेश दिया कि वह महिलाओं के शैक्षणिक, आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है संघ की सदस्यों ने इस पहल को सफल बनाने के लिए सभी की समय पर उपस्थिति और सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में फाउंडर की सदस्या श्रीमती शालू बाकलीवाल ने बताया कि उक्त समय प्रियंका पाटनी, पूनम सेठी, सरिता जैन, सुमन जैन, रेखा पाटनी तथा फाउंडर की सभी महिला मेम्बर उपस्थित थीं, उक्त कार्यक्रम का खुशबू जैन ने मंच संचालन किया।

भव्य जिन मंदिर शिलान्यास समारोह एवं गुरु मां स्वस्ति भूषण माता जी का 30 वां दीक्षा जयन्ति महोत्सव की पत्रिका का विमोचन

पारस जैन 'पार्श्वमणि', संवाददाता

प्यावड़ी, पीपलू टोंक (राज)। श्री 1008 श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र समिति प्यावडी के अध्यक्ष रतन लाल जैन उपाध्यक्ष रमेश चंद प्यावड़ी के नेतृत्व में भारत गौरव विदुषी लेखिका जहाजपुर स्वस्तिधाम तीर्थ प्रणेत्री गणिनी आर्यिका 105 परम पूज्य गुरु माँ स्वस्ति भूषण माताजी के पावन सान्निध्य में स्वस्तिक मांगलिक भवन हिण्डोली में भव्य जिन मंदिर शिलान्यास समारोह एवं भव्य 30 वां दीक्षा जयन्ति महोत्सव की पत्रिका का विमोचन किया गया। ये आयोजन दिनांक 22 जनवरी से 23 जनवरी 2026 तक हर्षोल्लास के मंगलमय वातावरण में आयोजित किया जाएगा। प्यावडी में अति प्राचीन जैन अतिशय क्षेत्र है जहां पर भव्य मनोहारी चंद्र प्रभु की मनोहर प्रतिमा विराजमान है। जिनके दर्शन मात्र से अंतर्मन में दिव्य शांति महसूस होती है। कई बार पूर्णिमा को प्रातःकाल अभिषेक के समय चांदी के सिक्के अपने आप वेदी पर गिरते हैं और कई बार केसर भी दिखाई दी गई। जिसका समाचार कई जैन पत्र पत्रिकाओं में प्रमुखता के साथ प्रकाशित हुआ। इसके मैने भी खूब समाचार दिए थे। जब में पारस जैन 'पार्श्वमणि' पत्रकार पहली बार यहां पहुंचा तो बाबा के दर्शन करने के बाद वहां से दूर जाने को मन नहीं हुआ। यहीं से 6 किलोमीटर की दूरी पर पीपलू गांव है वहां 400 लोगों की जैन समाज है। वहीं की जैन समाज के युवा पीढ़ी की टीम प्रतिदिन अभिषेक करने इस अतिशय क्षेत्र पर आते हैं। इस मंदिर का भव्य शिलान्यास का आयोजन एवं गुरु माँ स्वस्ति भूषण माता जी का 30वां दीक्षा समारोह आयोजित किया जायेगा।

इस अवसर पर अतुल जैन, हिमांशु जैन, अशोक जैन, राजेश जैन, बुद्धिप्रकाश जैन, महावीर जैन, सुशिल जैन, स्वास्तिक जैन, शिखर चंद जैन, सुनील जैन, श्रेयांस जैन, विनीत जैन, विकास जैन उपस्थित थे।

उ. प्र. जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ

(संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश सरकार के अन्तर्गत स्वायतशासी संस्थान)

ऐसे ख्यातिलब्ध महानुभाव जिन्होंने जैन संस्कृति, परम्परा, साहित्य, दर्शन, आध्यात्म आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया हो, को निजी सहभागिता के अंतर्गत संस्थान द्वारा 2025-26 में निम्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जाना है:-

क्र.	पुरस्कार/सम्मान	सम्मान राशि
01	1. स्व. श्री किशोरचन्द्र जैन की पुण्य स्मृति में ''तीर्थंकर ऋषभदेव सम्मान''	रू. 1,00,000/-
02	2. स्व. श्री निर्मल कुमार सेठी की स्मृति में ''तीर्थंकर महावीर अहिंसा सम्मान''	रू. 51,000/-
03	3. स्व. श्री हरक चन्द्र जैन सेठी की स्मृति में ''आचार्य कुन्दकुन्द सम्मान''	रू. 51,000/-
04	4. स्व. श्री राज बहादुर एवं स्व. श्री धर्मवीर जैन की स्मृति में ''भरत चक्रवर्ती सम्मान''	रू. 31,000/-
05	5. स्व. श्री नवीन जैन की स्मृति में ''श्री गणेश प्रसाद वर्णी श्रुत आराधक सम्मान''	रु. 21,000/-
06	6. स्व. श्री राजकुमार-संतोष कुमार जैन की स्मृति में ''श्रुत संवर्धन सम्मान''	रु. 21,000/-

आवेदन हेतु अर्हताएँ, नियमावली एवं आवेदन पत्र का प्रारूप संस्थान की वेबसाईट https://upjvri.org.in पर उपलब्ध है। निर्धारित प्रारूप पर भरे आवेदन पत्र दिनांक 20 दिसम्बर, 2025 को सांय 05.00 बजे तक निदेशक, उ. प्र. जैन विद्या शोध संस्थान, विपिन खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ उत्तर प्रदेश-226010 के पते पर पंजीकृत डाक अथवा ई-मेल jainsansthan@gmail.comपर अवश्य प्रेषित किये जायें।

- निदेशक

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 01. मेरा बेटा जापान में 6 साल से नौकरी कर रहा है, मगर जब ही हम उसको भारत में वापस बुलाने की बात करते हैं तो उसे क्रोध आ जाता है। हम बहुत परेशान है - सहदेव जैन, बैंगलोर

उत्तर - सहदेव जी, अभी आप बेटे से भारत वापस आने की बात ना करें, दो वर्ष पश्चात् वह स्वयं ही आ जायेगा तब तक आप श्री चन्द्रप्रभु चालीसा शाम को चन्द्रमा को देखकर पढ़ें।

प्रश्न 6. शादी के 6 वर्ष पश्चात् अब पत्नी को बेहद क्रोध आने लगा है - अनिरूध जैन, मुम्बई

उत्तर पत्नी की कुंडली में राहु की दशा शुरू हो गयी है। अतः आप श्री नेमिनाथ जी का चालीसा पढ़ें व मंगलवार को लाल दाल दान करें।

प्रश्न 7. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरे घुटने में लगातर दर्द बढ़ रहा है। चिकित्सकों के अनुसार आपरेशन कराना पढ़ेगा, मैं बहुत परेशान हूं - अम्बिका प्रसाद, झांसी

उत्तर - अम्बिका जी, आपकी कुंडली में चल रही मंगल की दशा के कारण आपरेशन जरूरी हो जाता है। आप श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः की माला रोजाना फेरें व मूंगा रत्न मंगलवार को धारण करें।

प्रश्न 8. क्या गड़मूल नक्षत्र की शान्ति कभी भी करा सकते हैं - सोनिका बंसल, दिल्ली

उत्तर - गड़मूल नक्षत्र 27 दिन के बाद आता है, जिस दिन गड़मूल नक्षत्र हो उसी दिन शान्ति होती है।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 826755078

भामाशाह अशोक पाटनी ने दिया प्रथम आहार

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

पीपलदा सवाईमाधोपुर। मदनगंज किशनगढ़। गत 1 दिसंबर को आचार्यश्री वर्धमान सागर ससंघ सान्निध्य पंच कल्याणक कार्यक्रम में प्रसिद्ध भामाशाह अशोक पाटनी आर के मार्बल ग्रुप किशनगढ़ एवं श्री राजेन्द्र कटारिया अहमदाबाद प्रभु, गुरु दर्शन को परिवार सहित पधारे। प्रचार मंत्री गौरव पाटनी ने बताया कि श्रीमद जिनेंद्र पंच कल्याणक समिति द्वारा सकल दिगम्बर जैन समाज के सहयोग से आयोजित पंचकल्याणक महा महोत्सव के चौथे दिन केवलज्ञान कल्याणक पर श्री चंद्र प्रभु महामुनिराज को प्रथम आहार देने का सौभाग्य प्रसिद्ध भामाशाह श्री अशोक पाटनी, राजेंद्र कटारिया अहमदाबाद एवं परिवार को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात अनेक पुण्यशाली समाज जनों को आहार देने का सौभाग्य मिला। इस अवसर पर देवकृत रत्नवर्षा, पुष्पवर्षा, गंधोदक वृष्टि, शीतल मंद सुगंधित वायु प्रवाह, दुंदुभी बाजे पंचाश्चर्य

होते हैं। इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा में वात्सल्य वारिधि राष्ट्र गौरव आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने कहा कि श्री चंद्रप्रभु भगवान को केवलज्ञान होने पर धर्मतीर्थ का प्रवर्तन स्थान पर समवशरण में धर्म देशना दी। भारत की अनेक नगरों में जिनालयों का निर्माण कर भगवान की प्रतिमा विराजित की जाती है। प्रतिमा और भगवान में यह अंतर है कि आचार्य साधु परमेष्ठि प्रतिष्ठाचार्य के माध्यम से प्रतिमा में भगवान के गुणों का आरोपण सूरी मंत्रोच्चार से देते हैं तब वह प्रतिमा भगवान बनकर पूजनीय हो जाती है। सौधर्म इंद्र और अन्य इंद्र परिवार ने पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में भाग लिया है यह मंगल देशना पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने महामुनि श्री चंद्र प्रभ के तप कल्याणक के पावन अवसर पर प्रगट की। वात्सल्य वारिधि भक्त परिवार के राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री ने आगे उपदेश में बताया कि आहार दान की पात्रता श्रेष्ठ पुण्यशाली मनुष्यों को होती है। देवताओं को आहार देने की पात्रता नहीं होती है। सौधर्म इंद्र रत्नों जड़ित भव्य समवशरण की रचना करेंगे जिसमें महामुनि श्री चंद्रप्रभु दिव्य देशना से धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करेंगे। मनुष्य जीवन में आपने कितना धर्म धारण कर पालन किया है इसका स्वयं मूल्यांकन कीजिए। आचार्य श्री के प्रवचन के पूर्व मुनि श्री हितेंद्र सागर जी ने प्रवचन में पाटनी और कटारिया परिवार की देव शास्त्र और गुरुओं के प्रति चारों दान की प्रशंसा की। समवशरण में आचार्य गणधर बने - महामुनिराज श्री चंद्र प्रभु के दिव्य समवशरण में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने गणधर रूप में भगवान की दिव्य देशना प्रसारित कर सौधर्म, मुख्य श्रोता और श्रावक/श्राविकाओं की अनेक जिज्ञासा का आगम सम्मत समाधान प्रवचन माध्यम से किया।

वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज ससंघ की मौजूदगी में केवलज्ञान संस्कार क्रिया, अधिवासना, मुखोद्घाटन, नयनोन्मिलन, सूरीमंत्र, गुणारोपण, केवल ज्ञान पूजा, हवन, पद्मोद्घाटन, समवसरण दर्शन व 46 दीप से आरती, दिव्य ध्वनि का आयोजन किया गया। इस दौरान हजारों जैन समाज के लोगों ने भगवान श्री चंद्रप्रभु एवं आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज के जयकारों से पांडाल को गुंजा दिया। आचार्यश्री वर्धमान सागर महाराज के सान्निध्य में दीप प्रज्वलन व चित्र अनावरण तथा आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन एवं जिनवाणी भेंट प्रसिद्ध भामाशाह अशोक पाटनी किशनगढ़ एवं राजेंद्र कटारिया अहमदाबाद ने परिवार सहित द्वारा किया। समवसरण का अनावरण का सौभाग्य किशनगढ़ के दिलीप कासलीवाल, राजेश पांडया बाबू गदिया, अनिल पाटनी एवं गौरव पाटनी को मिला। वहीं कार्यक्रम के दौरान किशनगढ़ के अशोक बोहरा, मनोज बोहरा का स्वागत अभिनंदन किया गया।

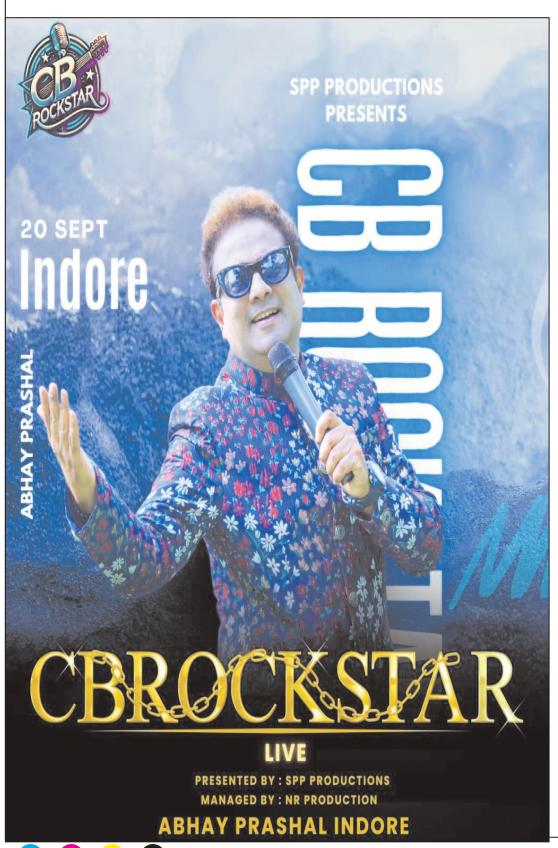

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000

महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985

कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड,
ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

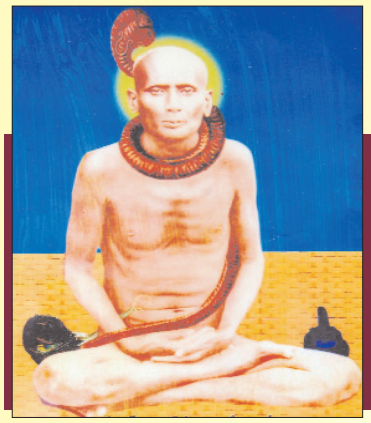

प्रथमाचार्य शांतिसागर व्रत

परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव (2024-25) के उपलक्ष्य में परम पूज्य पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज द्वारा सम्पूर्ण जैन समाज को संयम की प्रेरणा हेतु प्रदान किया गया एक व्रत का संकल्प

आचार्य पद प्रतिष्ठापन
शताब्दी महोत्सव
13 अक्टूबर 2024 -
3 अक्टूबर 2025

36 एकासन का नियम

प्रतिमाह कम से कम एक या अधिकतम तीन

जाप्यः ऊँ ह्रूँ प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर नमः।

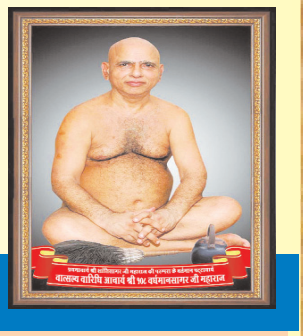

पूजनः प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की पूजा

प्रेरणा

सोहनलाल कासलीवाल
अध्यक्ष खण्डेलवाल दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

रिखबचन्द पाटोदी
अध्यक्ष
दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

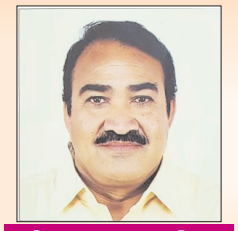

सोहनलाल पहाड़िया
पूर्व अध्यक्ष
दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

जितना जिनका प्रत्येक कार्य अदभुत आकर्षण व महान व्यक्तित्व है, जिनका नाम स्मरण करते ही हृदय भक्ति से भर जाता है, उन आचार्य श्री की गौरव गाथा तो उनकी मुखाकृति पर ही अंकित थी। लिखने की चीज भी नहीं यह तो मनन व अध्ययन की चीज है। काश उन्हें हम ठीक-ठीक समझ पाते।

सर्पराज का उपसर्ग जिनकी तपस्या में खलल न डाल सका, असंख्य चीटियों का घंटों काटना, जिनके लिये मानसिक अशान्ति का कारण न बन सका, सिंहनिष्क्रीड़ित व्रत के लम्बे उपवास के समय ज्वर का प्रकोप जिनको शिथिलाचार की ओर ठेल न सका, कंचन और कामिनी जैसे मोहक पदार्थ जिनके संयम साधना में बाधक न बन सके उन योगिराज की आत्मा कितनी महान थी, यह सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है।

- शेखरचंद पाटनी

दानवीर नगरी पांडिचेरी के पुण्यार्जक/नमनकर्ता

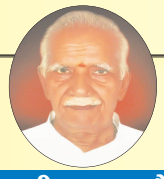

स्व. श्री नथमल जैन

गौतमचंद विशाल सेठी (गौतम ज्वैलर्स)

श्रीमती मनफूल देवी जैन

श्री सन्मति विजया एवं रिद्धी सिद्धी महिला मण्डल

सुधान्शु कासलीवाल जयपुर

मदनलाल राजेन्द्र अरविन्द, मनोज सुनील कासलीवाल

हुलास चन्द सबलावत परिवार, रेडिप्रिन्ट जयपुर

सोहनलाल विदीत कासलीवाल
सोहनलाल पहाड़िया
मनीष मार्बल
दीप ज्वैलर्स (दीप कुमार बज)
चिरंजीलाल हेमंत शरद कासलीवाल
मनीष प्रणय सेठी
बुद्धराज, प्रसन्न, बिमल कासलीवाल

रिखबचंद पाटोदी
शांतिलाल लूणकरण रेशमा पाटनी
गजराज भरत सुशील कोठारी
चम्पालाल निरंजन कासलीवाल
धर्मचन्द शकुन्तला जैन व्रती श्रावक
आसूलाल भागचन्द कासलीवाल
गणपत कोठारी

निर्मल कुमार छाबड़ा गुवाहाटी
नवरत्नमल पाटनी अष्टम प्रतिमाधारी जयपुर
संतोष, अजय, अनुज, आशीष, अतिशय, अनवीर, श्री दिगंबर जैन समाज - सेलम
विजयकुमार कासलीवाल कुचीलवाले किशनगढ
अशोक चूड़ीवाल बरपेटा रोड, आसाम
श्रीमती सरोजदेवी पांड्या, गुवाहाटी

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.....
.....
.....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)
वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-, दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।